UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180223
UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—552—7-7-66—10,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H86 B21M Accession No. P. G. H1838

Author बनारसी, वेदव्रत .

Title महत्व के गुमनामपत्र .

This book should be returned on or before the date last marked below.

महत्व के
गुमनाम पत्र

बेढब बनारसी

लोकसेवक प्रकाशन

बुलानाला, बनारस

प्रकाशक
लोकसेवक प्रकाशन
बुलानाला, बनारस

सम्वत् २००९ मूल्य १।) प्रथम संस्करण

मुद्रक
श्री रामनिधि त्रिपाठी
शिवराम प्रेस, बनारस

[यह पत्र महात्मा गान्धीके नाम भेजा गया था। किसी कांग्रेसीका है और अधिक तो पत्रसे ही जाना जायगा]

कदम कुआं, पटना।

२५-५-४६

पूज्य महात्माजी !

जयहिन्द

यह पत्र लिखना आवश्यक हो गया है। मैं कांग्रेस कार्यकर्ता हूँ। अब तक मैं तेईस बार जेल हो आया हूँ। सूत तो मैंने इतना काता है कि यदि सब आजतक एकत्र किया गया होता तो इंगलैंडकी सारी आबादीको बांधनेके लिए रस्सा बन सकता था। महात्मा गान्धीकी जय इतनी बार मैं चिल्ला चुका हूँ कि मेरे गलेसे अब बराबर शंखध्वनि ही निकलती है। और अपनी योग्यता बता दूँ। हिन्दू मुसलिम मेलके लिये सतत् प्रयत्न करता रहता हूं। मैंने अपने एक लड़केका नाम मुहम्मद नारायण और दूसरेका नाम कृष्णुल रहमान रखा है। अपनी लड़कीका नाम फातिमा कुमारी रखा है। इससे बढ़कर कांग्रेसी होनेका और क्या प्रमाण हो सकता है। किन्तु इस बार भी लोगोंने असेंबलीके चुनावमें मेरा नाम नहीं रखा है। मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आप इस अन्यायका प्रतिकार करें। एक बातके लिए क्षमा करें। मेरी भाषा ठीक नहीं है इसलिए इस प्रकार लिख रहा हूँ। मैंने मास्टर रामलोचन

शरण राय बहादुरको लिखा है कि हिन्दुस्तानीकी पोथियाँ मेरे पास भेज दें। उन्हें पढ़कर मैं हिंदोस्तानी ही बोलने-लिखने लगूंगा; किंतु इसी एक कमीके कारण मुझे असेंबलीमें न भेजा जाय यह तो बड़ा भारी अन्याय होगा।

आपकी सूचनाके लिए मैं बता दूँ कि मैं केवल बकरीका दूध ही नहीं पीता रातको सोते समय बकरीका तकिया लगाता हूँ। अपने कमरेसे बकरीकी लेंडी नहीं बटोरता। सबेरे बिना नागा नीराका सेवन करता हूँ और भोजनके समय प्याज लहसुन अवश्य खाता हूं। कांग्रेसीबननेके लिए और किसी बातकी आवश्यकता है।

एक और बात है अहिंसा की। इस विषयमें तो मैं ऐसा पटु हूँ कि महात्मा बुद्ध भी मेरे सामने होते तो लजा कर फिर गया चले जाते। मेरे भोजनमें चींटी पड़ जाय तो मैं उसे नहीं निकालता उन्हें भोजनसे वञ्चित करना उनकी हिंसा करनी है। मेरी चारपाईमें दो ढाई लाखसे कम खटमल नहीं होंगे किंतु मैं उन्हें निकालना पाप समझता हूँ। धूपमें भी नहीं रखता हूँ। और बिना बिछौना बिछाये उसपर सोता हूँ जिससे उन्हें मेरे शरीरतक पहुँचनेके लिए बिछौनेका सागर पार न करना पड़े। मुझे तो अबतक अहिंसा सम्राटकी पदवी मिलनी चाहिये थी किंतु मुझे असेंबलीमें पहुँचने से मेरे ऐसे प्रचण्ड कांग्रेसीके आगे फिर कोई किसीकी नहीं सुनेगा और उनकी नेतागिरी समाप्त हो जायगी।

कांग्रेस जमींदारी तोड़नेको अभी सोच रही है। मैंने कभी जमींदारी तोड़ दी। मेरे पास ग्यारह बीघे खेत थे बिलकुल अपने। आधा उसका अपनी स्त्रीके नाम कर दिया है और आधा अपने लड़केके नाम। मैंने जमींदारी तोड़ भी दी और दूसरेको दे भी दी।

महत्त्व के गुमनाम पत्र

अछूतोद्धारके भी संबंधमें मेरी क्रियाशीलता सुन लीजिये। अभी मैंने किसीसे सम्बन्ध तो स्थापित नहीं किया है, इसके लिए आपकी अनुमति आवश्यक थी और सहमति भी। और इसपर आपके दर्शनार्थ आना आवश्यक होगा। मुझे तो एक आदर्श विवाह करना है। यदि सब लोगोंके समान ही हुआ तब क्या। मेरी तो एक प्रार्थना आपसे है कि प्रत्येक कांग्रेसीके लिए यह अनिवार्य हो जाना चाहिये कि कमसे कम इस विभिन्न हरिजन जातियोंसे अपना, अपनी लड़कियोंका, अपने लड़कोंका किसी न किसी प्रकारका संबंध स्थापित करें। इससे हरिजनोंकी समस्या शीघ्र ही दूर हो जायगी। मैं हरिजनोंके हाथका गांजा पी लेता हूँ, और उनके हाथकी नीरा। गांजा इसलिए पीता हूँ कि जब तक उनके साथ सब प्रकारसे हम सहयोग नहीं करेंगे तबतक आपसमें परभाव बना रहेगा।

अपने भाषणोंमें मैंने सीताको माता कहना छोड़ दिया है। महारानी भी कहना मुसलमानोंके मनको चोट पहूँचाना है। मैं उन्हें सुलताना सीता रामको बादशाह राम कहता हूँ। ईदके दिन मैं मुसलमान कसाईके यहांसे ही मांस मगवाकर खाता हूँ। इसीसे हिंदू-मुसलिम मेलमें बड़ी सहायता मिल रही है। मुसलमानोंके दिलको चोट न पहुँचे इससे अपने यहाँ किसी प्रकारकी पूजा नहीं कराता। उस दिन मेरी स्त्रीने कहा कि सत्यनारायणकी कथा होनी चाहिये। राष्ट्रीयताके भावसे ओत-प्रोत होकर मैंने जुमेराती जुलाहासे कुरानशरीफका पाठ करा दिया। इससे गांव भर बड़ा प्रसन्न हुआ और रातको मेरे घरपर पत्थरके टुकड़े फेंकने लगे क्योंकि फूल का अभाव था।

रचानात्मक कार्यक्रममें मैंने इतना योगदान किया है किन्तु मेरी

ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। त्याग और बलिदानकी मैं मूर्ति हूँ। आजकल कांग्रेस धनिकों और पूंजीपतियोंकी संस्था बन गयी है। इसीसे हमारे ऐसे गरीबोंकी वहां पूछ नहीं है। मुझे तो इस समय प्रधानमन्त्री होना चाहिये था किन्तु जिन लोगोंने रुपये खर्च किये हैं, जो प्रच्छन्न पूंजीपति हैं वही चुनाव लड़ रहे हैं। अब आप ही का सहारा है। आप पार्लिमेंटरी बोर्डको लिख दें कि मैं चुन लिया जाऊँ। मैंने अपनी पूरी एक स्कीम बनायी है जिससे एक सप्ताहमें प्रान्तसे निरक्षरता दूर कर दूं। आपको बता ही दूँ जिस दिन प्रधानमन्त्री बनूंगा प्रान्त भरमें जन-गणना कराऊंगा। और शिक्षा विभागको लिख दूंगा कि उतने सार्टि-फिकेट मट्रिकुलेशनके छापदे छापनेमें जो देर लगे बस। इसके पश्चात सब लोगोंके पास ग्राम कांग्रेस कमेटीके मारफत वितरण कर दिया जायगा। एक दिनमें सब लोगोंको मैट्रिककी साट्रिफिकेट मिल जायगी। कोई निरक्षर नहीं रह जायगा। जमींदारी प्रथा भी दो दिनमें टूट सकती है। जितने जमींदार हैं उनको एक दिन सबेरे फांसी दे दी जाय। सब एक साथ ही समाप्त हो जायगा। और भी कितना मैंने सोच रखा है। किन्तु मेरी बात कोई नहीं सुन रहा है। इतने बड़े कार्यकर्ताकी उपेक्षा की जा रही है। हमारी जिला कांग्रेस कमेटीके मन्त्री कह रहे थे कि तुम्हे कोई योग्यता तो पदपर पहुँचने पर ही हो सकती है। रह गयी पढ़ने लिखनेकी बात। नेता बननेके लिए पढ़ने-लिखनेकी कौन आवश्यकता है। आपकी ही आज्ञा मानकर मैंने पांचवी कक्षासे पढ़ना छोड़ दिया था। देशके कार्यमें पढ़ना एक अनावश्यक वस्तु है। पढ़नेसे तो दासताकी मनोवृत्ति उत्पन्न होती है। मैं ऐसा कार्य कर सकता भी तो कैसे।

मैं यह पत्र इसलिए लिख रहा हूँ कि आप समझदार व्यक्ति हैं, मेरी योग्यता तथा कार्यको समझ सकेंगे। और यह भी चेतावनी देता हूँ कि

यदि मुझे अबसे लीमें न भेजा गया तो मैं कम्युनिस्ट हो जाऊंगा फिर कोई शक्ति कांग्रेस की रक्षा नहीं कर सकेगी। आपके पत्रोत्तरकी प्रतीक्षा करनेके पश्चात पी० सी० जोशीको पत्र लिखूंगा। मसविदा तैयार है। समय रहते आप स्थितिको संभाल लीजिये, नहीं तो आप जानिये—

आपका सेवक एक कांग्रेसी

२

[यह पत्र हैदराबादके शासक निज़ाम साहबको किसीने लिखा था। उन्होंने यहपत्र फाड़कर तीन चार टुकड़े कर दिये और अपने कमरेके एक कोनेमें फेंक दिया था। जहांसे रद्दीमें एक पंसारीकी दूकानसे एक पत्रकार मयोदय उठा लाये। उन्हीने गोंदसे जोड़ कर यह पत्र मेरे पास भेजा था। एतदर्थ हम उनके अनुगृहीत हैं। पत्र उर्दूमें है यहां उसका अनुवाद दिया जा रहा है।]

औरंगाबाद

श्रीमान् ,

श्रीमान्को अनेक बार प्रणाम करता हूँ। जब मुगलोंका राज्य दुर्बल होने लगा। तब आपके पुरखे हैदराबादके राजा बन बैठे। बड़ा अच्छा किया। जब कोई इस योग्य न रह जाय कि किसी वस्तुका उपयोग कर सके तब उससे वह वस्तु छीन लेनी चाहिये। तबसे आज तक आपके परिवारके लोग हैदराबादपर राज्य करते चले आये। बचपनमें मैं समझता था कि यह हैदराबाद अरबका एक भाग है। उस समय भूगोल का ज्ञान नहीं था। केवल आपके शासनको देख कर यह धारणा हुई थी। किन्तु जब कुछ बड़ा हुआ; पढ़ा लिखा तब ज्ञात हुआ हैदराबाद भारतवर्षका ही एक टुकड़ा है। मैं तो आपकी निजी दिनचर्यासे जानकारी नहीं रखता किन्तु सुना है कि सबेरे जब आप मशरिककी नमाज़ पढ़ते हैं

तब मरहठोंको और हैदरअलीको एक बार गाली देते हैं कि उन्होंने हैदराबादका राज्य मिटा डालनेमें कोई कसर बाकी नहीं रखी। और साथ ही अंग्रेजोंको धन्यवाद देते हैं जिनकी कृपासे आपका राज्य इन लोगोंके हाथों जाते जाते रह गया। उस समयका इतिहास बताता है कि आपकी कितनी दयनीय दशा थी। किन्तु यह समय अब बीत गया। हमें इस बातकी बड़ी प्रसन्नता है कि आप इस समय संसारके बड़े शासकोंमें हैं। साथ ही इस बातका दुख: है कि अभी तक आप खलीफा नहीं हुए। यह मुसलमान धार्मिक नेताओं का दोष है। उन्हें चाहिये कि आपको तुरत इसलामी दुनियामें खलीफा घोषित कर दें। इस संबंधमें आप दस-पांच लाख रुपये खर्च कर दें यह मेरी सलाह है।

आपके गुणोंकी प्रशंसाके लिए ही यह पत्र लिख रहा हूं। आपने अपनी रियासतमें शिक्षाका प्रबंध नहीं किया इससे जनतामें बड़ी प्रसन्नता है। पढ़ लिख कर लोग आपको तंग करते कि हमें नौकरी दो, हमारे लिए काम दो। भारत खेतिहर देश है यहांके लोगोंको खेती ही करनी चाहिये। इस संबंधमें एक और बात कह देना ठीक समझता हूँ। रियासतकी भाषा आपने उर्दू रख कर बड़ा उपकार किया है। जो राजाकी भाषा वही प्रजाकी भाषा होनी चाहिये। यहाँकी यही परम्परा रही है। जो भाषा राम बोलते थे वही केवट भी बोलता था और शबरी भी। जो भाषा राजा भोज बोलते थे वही भाषा गंगू-तेली भी बोलता था। यही सनातन धर्म है। इसी सिद्धान्तपर भारतमें अँग्रेजीका प्रचार हुआ है और इसी सिद्धान्तपर आपके राज्यमें उर्दू ही भाषा होनी चाहिये।

उर्दू साहित्यकी उन्नतिके लिए आप इतना व्यय करते हैं इससे आपका साहित्यप्रेम झलकता और छलकता है। राजाओं और शासकोंको

साहित्य और कलाका प्रेमी होना ही चाहिये। मैं तो समझता हूँ—कि आप कम खर्च कर रहे हैं। कुछ ऐसे हिंदू हैं जिन्हें यदि कुछ अच्छा पुरस्कार आप दे तो उर्दूका अच्छा प्रचार हो सकता है। दत्तात्रेय कैफीको आपने 'अपनी जबान' में रख लिया अच्छा किया। इस सम्बन्धमें डाक्टर तारा चंद, सुंदर लालजी इत्यादिसे लिखा पढ़ी हो तो कुछ लाभ हो सकता है।

हिंदू-मुसलिम एकताका जैसा उदाहरण आपके राजमें है वैसा कहीं हो नहीं सकता। बरसों तक आपकी कौंसिलका उप प्रधान हिन्दू ही रहा है। मैंने एक विवाह हिंदू-स्त्री और दूसरा मुसलमान स्त्री कर रखा है। टोपी मैं तुरकी ही पहनता हूँ—और अचकन तो पहनता ही हूँ। इसलिए मेरे ऐसे लोगोंको आप रियासतके बड़े स्थानोंपर रखें तो राज्यका बहुत लाभ होनेकी संभावना है।

आपने धन एकत्र करनेमें जो योग्यता दिखायी है उसका उदाहरण संसारके इतिहासमें कम मिलता है। और ठीक है। धन एकत्र करनेके ही लिए है। कारूँके पास इतना धन था कि उसके खजानेकी केवल कुंजियां चालीस ऊँटोंपर लाद कर एक स्थानसे दूसरे स्थानको जाती थी। कमसे कम आपके खजानेकी कुंजी चार ऊंटोंपर तो लदकर चले। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि राजके कर्मचारी राजकी सारी जनताकी मरदुमशुमारी लें और पता लगाएँ कि किसके पास कितना धन है। और आवश्यकतासे अधिक धन ले लिया जाय। इसमें आप कोई बुरी बात नहीं करेंगे। अलाउद्दीनने भी ऐसा किया था। उसका नाम इतिहासमें अमर है। यों तो आपका भी नाम अमर रहेगा किंतु मेरी बनायी तरकीबसे आपका खजाना भी भर जायगा।

देखिये आप एक स्वतन्त्र राज्य है। एक ओर अंग्रेजी राज्य है

एक ओर आप हैं। दोनों बराबर हैं। हाँ एक गवरनर जनरल थे यहाँ लार्ड रीडिंग। वह कुछ सख्त थे और बहुत ही खराब आदमी थे। उन्होंने एक पत्रमें आपको लिख दिया था कि आप स्वतन्त्र राज्य नहीं है। अंग्रेजी राज्यके मातहत हैं। कैसी वेजा बात है। आप इतना चूक गये। इसीलिए कहता हूँ कि इस समय आपकी थैलीका जल्द मुँह खुल जाना चाहिये। यदि उस समय आपने इगलैण्डमें तथा यहां कुछ नोटोंका प्रसार किया होता तो ऐसा गुस्ताखी भरा पत्र आपको न लिखा गया होता। ईश्वरको धन्यवाद है कि इस समय आप चेत गये हैं। आपने हिन्दू विश्वविद्यालय-को इस समय पांच लाख रुपये देकर बहुत ही कुशलतापूर्वक स्थितिको संभाल लिया है। अब कौन हिंदू-आपके शासनसे विरुद्ध आवाज उठा सकता है। जब राधाकृष्णन ऐसे दार्शनिक आपकी प्रशंसा बनारससे आक्स फोर्ड तक गायंगे तब कौन ऐसा हिंदू है जो आपके कामोंका विरोध कर सकता है। यदि आप इसीके साथ पांच लाख हिंदू सभाको भी दान दें तो सारे हड़तालोंकी धमकी और सारा आंदोलन तुरन्त शांत हो जाय। आशा है आप मेरे प्रस्तावपर उचित ध्यान देंगे। देशके भीतर जो कुछ हो इसके सम्बन्धमें कुछ ध्यान देना आवश्यक नहीं है। आप समाचार पत्रोंके संपादकोंपर कुछ रुपयेका जादू चलाइये। और कुछ संस्थाओंको खुले हाथों दान दे दीजिये। सबका मुँह बन्द हो जायगा। बड़े बड़े सपादकोंको बुलवा कर उन्हें तीन चार दिन तक दावत दीजिये। इससे भी आपकी प्रशंसा छपेगी।

देशके भीतरकी बात तो बड़ी आसानीसे दबाई जा सकती है। पुलिसको हिदायत कर दीजिये जरा सख्तीसे काम ले। सब ठीक हुआ जाता है। पुलिस जब तक कड़ाईसे काम नहीं करती तब तक जनता ठीक

नहीं हो सकती। पुरुषोंके साथ कठोरताका व्यवहार कराइये और स्त्रियों-का अपमान कराइये, देखिये सारा राज्य आपके वशमें हो जाता है। बाहर आपकी दानशीलताका बैंड बज ही रहा है।

बरार आपको मिल ही जायगा, केवल इंगलैंडमें जाकर रुपया खर्च करनेकी देर है और यहाँके भारत सरकारके राजनीतिक विचारको संभा-लिये सब ठीक है। गोआ खरीद लीजिये। आप बड़े शासक हो जायंगे। आपके शासनकी धूम मच जायगी। भारतका कोई राजनीतिक नेता आपके शासनकी निंदा नहीं करेगा। बहुत संभव था कि काश्मीरकी भांति आपके शासनके सम्बन्धमें भी लोग सतर्क होते किंतु, आपकी दान-शीलता, आपकी थैलीसे यह नहीं होगा। इसका विश्वास रखिये। आपने दीवान बहुत अच्छा चुना है। कांग्रेसका भी उसपर विश्वास है। अब चैनकी नींद सोइये।

आपका
एक शुभ चिंतक

३

[यह पत्र बनारसके कलक्टरके नाम लिखा गया है। पत्र अंग्रेजीमें है। उसका अनुवाद दिया जा रहा है।]

काशी

११ अगस्त, १९२३

आदरणीय महोदय,

मैं अंग्रेजी सरकार तथा आपके एक छोटेसे सेवकके नाते आपको यह पत्र लिख रहा हूँ। आशा है आप इसपर उचित ध्यान देंगे, ध्यान-पूर्वक पढ़ेंगे और जिन बातोंके लिए निवेदन किया जा रहा है उनकी उचित व्यवस्था करनेका उपाय करेंगे। यह मैं पहलेसे ही बता देना चाहता हूँ कि मैं आपका भक्त हूँ। मैं अपना नाम इसलिये नहीं दे रहा हूँ कि मुझे नामकी परवाह नहीं है। यद्यपि हमारे यहाँके एक बड़े धार्मिक-ग्रन्थ रामायणमें लिखा है कि नामकी बड़ी महिमा है किन्तु मुझे नामकी कुछ भी चिन्ता नहीं है। इसलिये यदि नाम नहीं दिया गया है तो आप इसका कुछ बुरा न मानियेगा। कृपा करके इस पत्रको आद्योपान्त पढ़ जाइयेगा।

मेरे नगरमें एक सज्जन हैं। उनसे मेरी थोड़ी जानकारी भी है किन्तु मैं उनसे मिलता कम हूँ। वह खद्दर पहनते हैं और कहा करते

हैं कि भारतको स्वराज्य मिल जाना चाहिये। यह कहना नहीं होगा कि इस प्रकारके विचारोंसे देशमें अराजकता फैल जानेकी आशंका है। मैं इस बातका विश्वास दिलाता हूँ कि मैं उनका विरोध करता हूँ। कल तो उनसे लड़ाई तक हो गयी और मैंने कह दिया कि आप कभी मेरे यहाँ न आया करें। उन्हें पान तक मैंने नहीं खिलाया। अंग्रेजी सरकारके समर्थनमें मुझे अपने भाई या रिश्तेदारोंको भी छोड़ना पड़े तो मैं तैयार हूँ। जिस व्यक्तिके सम्बन्धमें मैं लिख रहा हूँ उनका नाम···है। वह कांग्रेसको चन्दा भी बहुत देते हैं। बहुत पैसेवाले तो नहीं हैं किन्तु हां कुछ तो हैं ही। इसी पैसेकी बदौलत अपने समर्थकोंको एकत्र कर लेते हैं।

कहना नहीं होगा कि यदि इसी प्रकार उनका कार्य चलता रहा तो अंग्रेजी राज्यके लिए बड़ा भयावह समय आ जायगा। इन लोगोंके कार्यको शीघ्र रोकना होगा। मुझसे जितनी सहायता बनेगी मैं करूँगा। यों तो कर ही रहा हूँ। एक भक्त प्रजाका धर्म ही है। मेरा तो ब्रिटिश शासकोंमें अटल विश्वास है। उनमें पूर्ण भक्ति है। क्वीन विक्टोरियाको मैंने अपनी दादीके समान समझा। और जिस दिन उनका स्वर्गारोहण हुआ मैंने गंगा स्नान किया। यह सब इसलिये लिख रहा हूँ कि मेरी आस्था, मेरी लगन आप लोगोंमें अपरम्पार है।

इसके लिए मैं पुरस्कार नहीं चाहता। ऐसी इच्छा होती तो अपना नाम अवश्य देता। किन्तु एक बात कहनेकी धृष्टता करता हूँ। इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। प्रत्येक पहली जनवरीको सरकार लोगोंको पुरस्कार देती है। किन्तु कितने ऐसे सेवक हैं जो सरकारकी सेवा करते रहते हैं, सरकारका गुण गाते है, समय-कुसमय चन्दा देते हैं किन्तु

वह निराश ग्रह जाते हैं वह इस नीयतसे सरकारके भक्त नहीं है कि अपनी भक्तिका पुरस्कार लें। किन्तु मेरा विनम्र निवेदन है, सलाह तो मैं कैसे दे सकता हूँ, कि उन लोगोंपर सरकारकी कृपाकी वर्षा होनी चाहिये। आप तो स्वयं सब जानकारी रखते हैं। घर-घर व्यापी हैं। कौन बात नगरकी आपसे गुप्त रह सकती है। किन्तु दो-तीन व्यक्तियोंका नाम मैं बता देना चाहता हूँ। यह लोग चातककी भांति आपकी ओर लौ लगाये रहते हैं, कि सुधाकी वृष्टि हो जाय। चिथरूदास सरकण्डा, खुखड़ीदास भुट्टालाल, सूतमल इत्यादि। मैंने इन लोगोंका नाम इसलिए लिखा कि मुझे सदा इस बातकी चिन्ता रहती है कि आपके सेवक आपसे असन्तुष्ट न हो जाय। सुना है कि शीघ्र ही आप इस वर्षके लिए लोगोंके नामोंकी सिफारिश लाट साहबके पास भेजेंगे।

आप अनेक कार्योंमें व्यस्त रहते हैं। इतने बड़े जिलेका शासन इस योग्यतासे करना आपका ही काम है। बहुत सम्भव है आप अपने हितैषियोंका, राजके सहायकोंका, सरकारके भक्तोंका नाम भूल जायँ। इसीलिए इन लोगोंका नाम स्मरण करा दिया है। यों तो मैं भलीभांति जानता हूँ कि आपको स्वयं अपने सेवकोंके लिए बड़ी चिन्ता रहती है।

राय बहादुरीसे काम चल जायगा। इस पदवीसे विभूषित होकर अपनेको लोग धन्य समझेंगे। ब्रिटिश राज्यमें राय बहादुर वैसे ही हैं जैसे राजाके राजमुकुटमें मोती। इन लोगोंसे आपकी शान है आपका बड़प्पन है। जिस सभामें राय बहादुर पहुँच जायँ कोई राजनीतिक व्यक्ति आ नहीं सकता। राय बहादुर लोग जनताकी घृणाके पात्र भले ही हों, लोगोंकी दृष्टिमें नीच समझे जायँ, लोगोंका विश्वास इनमें न हो, किन्तु सब अपमानोंका घूँट पी कर ब्रिटिश राजकी सत्ताकी जड़को पकड़े हुए हैं।

इनका विश्वास है कि भारतमें ब्रिटिश राजसे ही कल्याण होगा। यदि किसी प्रकारसे इस साल इसको गुञ्जायश न हो तो राय साहबी ही सही फिर अगले साल अवश्य ध्यान रखियेगा।

मेम साहबको मेरा बहुत बहुत सलाम कहियेगा। उनके समान महिला मैंने कभी नहीं देखा। सुन्दरतामें तो बिल्कुल नूरजहां ऐसी जान पड़ती हैं। शील स्वभावमें तो गइया हैं। मैं तो कहूंगा कि बछिया हैं। हम लोग तो सदा उन्हें अपनी गुड़िया-सी समझते हैं। यह कृपया आप उनसे कह दीजियेगा। हो सके तो यह पत्र पढ़कर सुना दीजियेगा। वह साड़ी नहीं पहनती नहीं तो हम लोग ऐसी साड़ी पहना देते कि वह चमक उठतीं। और आपका जी प्रसन्न हो जाता। फिर भी हम लोग किसी प्रकारसे आपसे बाहर नहीं हैं। जो कुछ भी आज्ञा हो उसके पालनमें सदा तत्पर रहते हैं और रहेंगे।

हम इसी भांति पत्र द्वारा आपको नगरकी स्थितिकी सूचना देते रहेंगे। मौखिक बात भी मिलकर की जा सकती है किन्तु आपको तो समय बहुत कम रहता है फिर मिलने-जुलनेवाले आ जाते हैं तब रहस्यकी बातें नहीं हो सकती। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं प्रति सप्ताह आपका दर्शन करता हूँ। सोचता हूँ कि मिलना क्या केवल दर्शन करना है। सप्ताहमें एक बार आपको देख लेता हूँ तो सप्ताह भर स्वास्थ्य ठीक रहता है, तबीयत प्रसन्न रहती है और सारा कारोबार सुचारुरूपसे चलता है और सफलता मिलती है। भगवान आपको एक सहस्र सालकी आयु दे, ईश्वर करें आप बड़े लाटके पदको सुशोभित करें, आपके यहां शराबकी कभी कमी न हो।

आपका

किंकर नगरका एक रईस

४

[निम्नलिखित पत्र एक विश्वविद्यालयके प्रोफेसरके पास आया था। मूल पत्र अंग्रेजीमें है। प्रोफेसर साहबके अज्ञानमें यह पत्र उनकी मेजकी दराजसे घुमा लिया गया है और संग्रहकर्ताके पास भेजा गया है।]

.....

.....

२४-२-४५

महोदय,

विवश होकर यह पत्र लिख रहा हूं। यदि आप इसपर भी ध्यान न देंगे तो आगे जैसा उचित समझा जायगा किया जायगा। पत्र यद्यपि एक व्यक्ति लिख रहा है किन्तु इसके साथ सहमति कालेजके बहुतसे विद्यार्थियों की है। आपको पढ़ानेमें यदि रुचि नहीं है तो आप कोई दूसरा काम क्यों नहीं कर लेते। आजकल तो बीड़ीकी दूकानमें भी बहुत लाभ हो जाता है। और यदि कहीं निकट आपकी दूकान हुई तो मैं विश्वास दिलाता हूं कि सब विद्यार्थी सिगरेट आपसे ही मोल ले लेंगे। आपको घरपर पुस्तकें पढ़नेका अवकाश नहीं मिलता यह तो हम लोग जानते हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि वाइस चांसलर और प्रो० वाइस चांसलरके यहां तरकारी और अनाजका प्रबन्ध करनेमें आपका समय अधिक निकल

जाता है। यह भी सुना गया है कि आपका ग्रेड—इसलिए इसबार बढ़ गया है कि आपने विश्वविद्यालयके एक बड़े अधिकारीके परिवारको बड़े प्रेमसे पढ़ाया है और उनकी श्रीमतीजीके जंपर सिलानेके लिए दरजीके यहां बड़ी दौड़ धूप की।

क्लासमें पढ़ानेमें आपका मन नहीं लगता और आधे घंटेतक कुमारी···का हालचाल पूछते हैं और आधे समय तक पुस्तकके सम्बन्ध में आलोचना होती है। वह भी आलोचना कैसी ? विषयकी नहीं। शैलीकी नहीं। आपके मुखसे पता चला कि इसका लेखक एक बजे रातको घूमकर लौटता था और अमुक कविता डेढ़ बोतल शराब पीकर लिखी गयी है। कवियोंकी जीवनीसे आपका इतना घनिष्ठ परिचय है यह तो जानकर अपार आनन्द हुआ विशेषतः आपको उनकी प्रेमिकाओंके सम्बन्धमें बड़ा रसीला परिचय है। खेद है कि इस समय हमें कवियोंके प्रेमके सम्बन्धमें जानकारी नहीं प्राप्त करनी है और उनकी कृतियोंको समझना ही आवश्यक है। समझमें नहीं आता है कि आपने परीक्षा कैसे पास की है। या तो आपने नकल किया है या परीक्षकोंके घरपर धरना देकर उनसे कापियोंमें नम्बर बढ़वा लिए हैं।

हम लोगोंने कभी हड़तालकर दी होती किंतु इसलिए हड़ताल नहीं की कि आपका घंटा मनोरंजनके लिए हमने समझा है। यह जानते हुए भी कि आपको कुछ नहीं आता और आपका मन पढ़ानेमें नहीं लगता हम लोग दरजेमें इसलिए बैठे रहते हैं कि आपको मूर्ख बनानेमें बुद्धिको कुछ उत्तेजना प्राप्त होती है और समय कट जाता है। कभी-कभी यह आश्चर्य अवश्य होता है कि यदि लड़कियां न होतीं तो आप दर्जेमें क्या पढ़ाते। आप हाजिरी लेने भी दर्जेमें आते कि नहीं।

महत्त्व के गुमनाम पत्र

एम० ए०···का पांचवा परचा आपके पास है आपसे स्पष्ट कह देना चाहता हूँ कि उसमें यदि सब लोगोंको अस्सी प्रतिशत नंबर नहीं मिले तो आपका सारा भंडा फोड़ होगा और जब तक आप निकाल न दिये जायंगे तब तक हड़ताल रहेगी। वाइसचांसलर और प्रोवाइसचांसलर तथा जितने आपके समर्थक हैं सबको चुनौती दी जायगी तब हम लोग देखेंगे आपकी रक्षा कौन करता है। यह तो हम लोगोंको विश्वास ही है कि कुमारी·····इस वर्ष प्रथम होनेवाली है इसपर विचार करनेके लिए हम लोगोंकी एक बैठक होनेवाली है तब उसपर विचार किया जायगा। कुछ लोगोंका विचार है कि लड़कीकी बात है जाने देना चाहिये। उदारता दिखानी चाहिये, आपसे समझना चाहिये। कुछ लोगोंका विचार है कि अन्याय कहीं भी हो रोकना चाहिये और इस मामलेको आगे बढ़ाना चाहिये। अभी हम निश्चय करेंगे कि इस संबंधमें क्या करना उचित होगा। जो कुछ भी हो आपको चेतावनी दे दी जाती है कि यदि हम लोगोंको कम नंबर मिले तो इसका परिणाम ठीक नहीं होगा।

बहुत संभव है कि आपको यह सूझ आ जाय कि कुछ छात्रोंका नाम अधिकारियोंके सामने रख दें या यह पत्र अधिकारियोंके पास ले जांय और लोगोंका नाम बताएँ कि इन लोगोंके ऊपर संदेह है। यदि आपने ऐसा किया तो यह चेतावनी देना अपना कर्तव्य समझता हूँ कि हम लोगोंका कुछ नहीं बिगड़ेगा। हम लोगोंने कोई ऐसी बात नहीं की है जिससे दंडके पात्र हों। हां आपको फिर अपने भविष्यके सम्बन्धमें सोच लेना चाहिये। हम लोग आपके संबंधकी सारी घटनाएँ प्रकाशित कर देंगे।

दूसरी बात यह है कि आप इस बल पर हैं कि अधिकारियों तक आपकी पहुँच है। विद्यार्थियोंपर बहुत रोब गांठनेकी चेष्टा करते हैं। यदि

आपमें कुछ योग्यता होती, आपको कुछ पढ़ाने आता, आपसे हमलोगोंको कुछ लाभ होता तो किसी सीमा तक हम आपकी इस मूर्खताको सहन भी करते। हम लोग आपके इन कामोंको उपेक्षाकी दृष्टिसे देखते रहे हैं। अब इनका विरोध होगा। यदि किसी विद्यार्थीको आपने गैरहाजिर किया तो अधिकांश विद्यार्थी आपके दर्जेमें आना बंद कर देंगे। दो-एक टोडी भले ही रह जांय और यह भी बता दूँ कि लड़कियां भी आपसे बहुत असंतुष्ट हैं। शायद कुमारी···आपका पत्र लें क्योंकि उन्हें डिवीजन प्राप्त करना है और उनके ऊपर आपकी कृपाकी वर्षा होती रहती है।

तीसरी बात यह है कि आप दर्जेमें पढ़कर आया कीजिये। और यदि आपको अवकाश न मिलता हो तो आप यह दर्जा बदलकर कोई और दर्जा पढ़ाना आरंभ कीजिये। हम लोगोंका आधा वर्ष बेकार हो गया और परीक्षा निकट है। जैसा ऊपर कहा गया है नम्बर तो आपको देना ही होगा। मगर कुछ बता भी देते तो विषयका कुछ ज्ञान भी हो जाता।

और अंतिम बात यह भी बता दूँ कि आप जो संध्याको चक्कर लगाया करते हैं उसे छोड़ दीजिये। आप समझते हैं कि इसका पता किसीको नहीं है। अच्छा बताइये क्या यह सच नहीं है कि १२ तारीखको आपने···यहां चाय पी थी।···को जो पत्र आपने लिखा था वह मुझे मिल गया है। आप समझते हैं आप ही वहां जा सकते हैं। आप प्रोफेसर होनेका लाभ उठा लेते है इसमें संदेह नहीं हैं। किंतु हमलोग भी उड़ती चिड़िया पकड़ते हैं। आपका सारा कार्य हम लोगोंको विदित है। आप अब कृपाकर सचेत हो जांय—

आपका
एक विद्यार्थी

महत्व के गुमनाम पत्र

५

[यह पत्र इसी प्रांतके एक नगरके कोतवालके पास लिखा गया था। आजसे चार साल पहले। बैरंग होनेके कारण लखनऊके डेड लेटरके दफ्तरमें चला गया। लेखकका पता न होनेके कारण यह वहीं रद्दीमें पड़ा रहा। एक क्लर्कने संकलन कर्ताको दिया]

बगड़हा,
रानीपुर
११-९-४५

जनाब कोतवाल साहब,

आदाब अर्ज

आपके रोब और इकबालसे आपका दबदबा सारे नगरमें छाया हुआ है। और सबेरे शाम आपकी प्रशंसाके गीत लोग गाते हैं। सच पूछिये तो अंग्रेजी राजकी इमारतकी नींव आपही ऐसे नमक हलाल सेवकोंके खंभेपर टिकी है नहीं तो कबकी ढह गयी होती। आपने बड़ी कुशलता से अभी हालमें हिन्दुओं और मुसलमानोंको जो लड़ा दिया था उसकी मैं प्रशंसा करता हूँ। कोई सरकार हो चाहे देशी या विदेशी सभी आपकी प्रशंसा करेंगे। और आपका गुण गायेंगे। विदेशी सरकारकी नीतिका आप पालन करते हैं; देशी सरकार राष्ट्रीयताके नामपर आपसे बोल नहीं सकती और आप स्वयं अपनी जातिका भला करते हैं। एक बात और।

इस प्रकारकी लड़ाईसे राजनीतिक लाभ ही नहीं होते। सुना है कि आपकी पास बुकमें भी वृद्धि हो गयी है। इसके लिए आपको बधाई है।

आपकी कृपासे नगरमें व्यापारकी वृद्धि हो रही है। पता नहीं कुछ लोग जूएका विरोध क्यों करते हैं। बड़े बड़े लोग कलकत्ता और बम्बईमें फाटका खेलते हैं। क्या वह जुआ नहीं है। उसके विरुद्ध सरकारने कौनसा कानून बनाया है। आप बड़ा अच्छा करते हैं अपने नगरमें इसे रोकनेके लिए कुछ नहीं करते। व्यापारिक स्वतन्त्रतापर आघात नहीं पहुँचाते इससे जनताका लाभ होता है। और कुछ दलाल कर्मचारियोंको भी वेतनके अतिरिक्त बंधी रकम प्रति मास मिल जाती है। खेलनेवाले भी निर्भय होकर खेलते हैं। इससे सबका भला होता है।

उस दिन जो हत्या हुई थी उस सम्बन्धमें आपने बड़ा अच्छा किया जो हत्यारेका पता नहीं लगा। आप तो दया और क्षमाके अवतार जान पड़ते है। रुपये उसने स्वयं दे दिये इसमें आपका क्या दोष हो सकता है। किन्तु यह तो हो गया कि एक जानके बदले दूसरी जान भी नहीं गयी। इससे पता चलता है कि आप अहिंसाके पूर्ण समर्थक हैं निष्प्रयोजन किसीकी जान लेना नहीं चाहते। आशा है आप सदा ऐसी ही नीतिका पालन करते रहेंगे। नगर निवासी अब निश्चिन्त हैं कि यदि किसी कारण उनसे कभी खून हो भी गया तो वकीलोंके पीछे उन्हें दौड़ना नहीं पड़ेगा। केवल रुपयोंका ही प्रबन्ध उन्हें करना पड़ेगा। इसके लिए आपको कितना धन्यवाद दिया जाय। लेखनीमें वह शक्ति नहीं है। नहीं तो आपकी यथोचित प्रशंसा करनेको चेष्टा करता।

यह आपका ही प्रताप है कि नगरमें अब चोरी होती ही नहीं। आपके रहते नगरमें चोर रह जांय ऐसा सम्भव नहीं। कभी-कभी जो लोग

रपट लिखवाने जाते हैं वह केवल आपको बदनाम करनेके लिए षड्यन्त्र रचते हैं। उनकी सजा होनी चाहिये। और कुछ ऐसी कड़ी सजा रपट लिखवानेके लिए होनी चाहिये कि फिर चोरीकी रपट लिखवानेका किसी को साहस न हो। कुछ लोग केवल आपको बदनाम करनेके लिए कहा करते हैं कि चोरी होती है आप उसे छिपा देते हैं। पहले तो इसपर विश्वास नहीं होता दूसरे यदि यह ठीक भी हो तो चोरोंकी जीविकाके लिए कुछ प्रबन्ध तो होना चाहिये। वह कौन व्यवसाय करते हैं या नौकरी करते हैं। उसके खाने-पीनेके लिए कौनसा प्रबन्ध है। आप उनकी देख-रेख करते हैं, उनकी जीविकाका प्रबन्ध कर देते हैं इसमें कौन-सी बेजा बात है। और इस सेवाके बदले कुछ पुरस्कार भी लेते हैं तो क्या पाप करते हैं।

सबसे अधिक प्रसन्नता हमें इस बातकी हुई कि गत दंगेके अवसर पर तथा अनेक पर्वों तथा उत्सवोंपर आपने हिन्दू जनताके ऊपर खूब कठोरताका व्यवहार किया। उचित शासन रखनेके लिए हिन्दुओंको दबाना आवश्यक है। इन्हें इसीका अभ्यास है। एक हजार वर्षसे यह दबते चले आये हैं। इससे ही सारे नगरमें शान्ति रह सकती है। जितना आप इस कृत्यमें सफल होंगे उतनी ही आपकी उन्नति होगी। मि··· ने इसी नीतिसे काम लिया वह कप्तान हो गये। विगत कांग्रेसी सरकारमें भी ऐसे ही लोगोंकी उन्नति हुई जो हिन्दुओं को दबाते थे। राष्ट्र की हितकी दृष्टिसे यह बहुत आवश्यक है। उन्नतिका यह मूल मन्त्र है। इसलिए यही आप करते रहिये। हिन्दू कभी आपका विरोध नहीं करेंगे। क्योंकि उन्होंने साहसको संचय करनेका निश्चय किया है और जब स्वराज्य हो जायेगा तब उसे काममें लायेंगे। वह समझते हैं कि इसी समय व्यय कर दिया जायगा तब स्वराज्य मिलने पर क्या होगा।

दो एक समाचार पत्र ऐसे हैं जो समय कुसमय आपके सम्बन्धमें कुछ लिख देते हैं। आप उनकी कुछ चिंता न करें। आपके पास अनेक ऐसी तरकीबें हैं जिनसे आप ऐसे लोगोंको वशमें कर सकते हैं। उनके प्रतिनिधियोंको कभी-कभी जलपान करा दीजिये। उन्हें कभी-कभी बुलाकर गद्देदार कुरसीपर बैठा दीजिये। आपके विरुद्ध कभी शिकायत नहीं छप सकती। यदि शिकायत होगी भी तो आप कह सकते हैं कि इस साम्प्रदायिक विद्वेषके कारण हुआ है। ऊँचे अधिकारी आपका कुछ नहीं करेंगे। कप्तानसे गवरनर तक आपकी रक्षा करेंगे। और दिनोंदिन आपकी उन्नति होती जायगी।

एक बात आपने बड़ी अच्छीकी है उसके लिए प्रशंसाके अतिरिक्त और क्या कहा जाय। आपने राय बहादुर पं०···को अपना मित्र बना लिया है। खां बहादुर···से तो आपकी दांत काटी रोटी है ही। राय बहादुर साहब आपकी सदा सहायता करेंगे। इतना ही नहीं समय कुसमय आप उनसे दलालका काम भी ले सकते हैं। आपको अनुभव होगा ही। पुराने कोतवालोंसे पूछ लीजिये उनसे आपको बड़ा लाभ हो सकता है।

आपका
एक प्रशंसक

६

[इस पत्रसे पता चलता है कि यह लखनऊके ताल्लुकदारका है। उन्होंने स्वयं स्पष्ट कर दिया है। इस प्रांतके गवरनरने इसे रद्दीकी टोकरीमें फेंक दिया था। अमीनाबाद पार्कमें संकलनकर्त्ताको एक रैउड़ी वालेने इसीमें रैउड़ी लपेट कर दी थी। पत्र अंग्रेजीमें था]

.....

११-४-४६

हिज एक्सेलेन्सी,

मैं आरम्भमें ही यह बात बतला देना चाहता हूँ कि मैं इसी प्रांतका एक बड़ा ताल्लुकेदार हूँ और ११ लाखकी मेरी निकासी है। कारणवश मैं अपना नाम नहीं दे रहा हूँ—किन्तु इस पत्र को आप हमारे सब भाइयों का ही पत्र समझियेगा और इस पत्रमें जिन बातोंकी ओर मैं संकेत कर रहा हूँ उस पर आपने ध्यान नहीं दिया तो सभी हमारे भाइयों को दुःख और कष्ट होगा। मैं अपने निजी सम्बन्धमें यह बता देना चाहता हूँ कि मेरे पितामहने दो अंग्रजोंकी जान बचायी थी सन् सत्तावन में। उनके पास थोड़ासा खेत था। वह दस बजे अपने खेत की ओर जा रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक हलवाहा दो अंग्रेजोंको हल में नाधे उनसे खेत जुतवा रहा है। वे बड़ी मिनतीसे उन्हें छुड़वा लाया। पीछे पता चला कि वह सैनिक अफसर थे। उसीमें उन्हें बड़ी जागीरें मिलीं।

पीछे वह राजा हो गये। मेरे पिता और सर हारकूर्ट बटलर एक ही प्याले में शराब पीते थे। मुझे बचपनकी बात याद है। किसी दावत में मैं भी गया था। एक मिठाई आधी खाकर गवरनर साहबने रख दी उसे मेरे पिता ने खा लिया। वह कभी कभी मेरे घर आया करते थे। उस समय के जलसे अब भी मेरी आंखोंमें सपने के समान घूमते हैं कभी कभी।

मैं इस समय एक विशेष बातके सम्बन्धमें लिख रहा हूँ मैंने और मेरे भाइयोंने समय कुसमय सरकारका साथ दिया है। सुना है अब हम लोगोंके अधिकार छीने जानेवाले हैं। हम लोगोंके पास यों अधिकार ही क्या है। हम लोग तो चुपचाप अपना समय बिता रहे हैं। न किसी दल-बन्दी से मतलब न राजनीतिसे। ब्रिटिश इण्डियन असोसियेशन केवल एक संस्था हम लोगोंने बना दी है जिससे आपको सदा सहायता मिलती रहे। सिवाय सरकार की सहायताके हम लोग करते ही क्या हैं। गत युद्धमें मैंने सरकारकी बड़ी सहायता की। इतना ही नहीं आरम्भ से ही केवल सरकारको ही नहीं वरन् सरकारके देशको सहायता पहुँचाता रहा हूँ। मेरी अवस्था इस समय चालीस सालकी है। जबसे मैंने होश संभाला बीस मोटरकारें मैंने खरीदीं। उनमें चौदह इंगलैंडकी बनी थीं। और केवल ६ अमरीकी। शराबका सदासे यह अनुपात रहा है कि एक चौथाई फ्रांसकी और तीन चौथाई स्काटलैण्ड की। और भी यदि मैं आपको जोड़ गिनाऊँ तो पता चलेगा कि मेरे शरीरमें रक्त नहीं, इंगलैंडके लाल पानीका ही प्रवाह है। इससे हम यह आशा करते रहे हैं कि अंग्रेजी सरकार सदा हमारी देखरेख करेगी। किन्तु अब सुन रहा हूँ कि हम लोगोंका अस्तित्व नहीं रह जायगा। आपके हाथों ऐसा नहीं होना चाहिये। आपका कर्तव्य है कि हमारी रक्षा कीजिये ? हमारी रक्षा न करना विश्वास

बात है। गदरके समय आपने हमसे वादा किया था कि हमारा साथ दो तो हम तुम लोगोंको सदाके लिए अधिकार देंगे जिसकी तुलना कोई नहीं कर सकेगा। आपने इसीके पुरस्कार स्वरूप हम लोगोंको लाइसेंससे मुक्तकर दिया था। हमें अधिकार मिला था कि हम अपना राज जिसे चाहें उसे दे दें। एक प्रकारसे हमें बड़ी स्वतन्त्रता थी, बड़ी सुविधा थी। अब आप किसी राजनीतिक दलके बहकानेमें आकर बीच धारा में हमें छोड़कर जाना चाहते हैं।

लोगोंको शिकायत है कि हममें बहुतसे दुर्गुण हैं। आप यह नहीं देखते कि हमने कितना सुधार किया। बटेर लड़ाना हमने छोड़ दिया। नहीं तो एक बार की बटेरकी लड़ाईमें बीसों हजार रुपये पानीकी भांति हमारे दादा परदादाने बहाया है। कनकौएका लड़ाना हमने आधा कर दिया है। जहां दरजनों मंगलामुखियोंका मंजुल मुखड़ा देखकर प्रातःकाल का नाशता होता था वहां अब कठिनाईसे एक दो का ही ठिकाना है। यह दूसरी बात है कि विशेष अवसरोंपर कभी पांच सात एकत्र हो जांय। अब यदि खाने-पीने और पहननेको भी लोग अनुचित समझें तब इसकी क्या दवा है। सो भी लोग बढ़ा बढ़ाकर बातें बताते हैं। जनताको भड़काने के लिए और सरकारको हमारे विरुद्ध खड़ा करनेके लिए सब बातें बनायी जाती हैं नहीं तो इनमें कोई तथ्य नहीं है। मैं अपना ही उदाहरण देता हूँ। शराबका खर्च प्रति मास मेरा केवल पन्द्रह सौ साठ रुपये हैं। हां दसमी दीवाली, होलीमें बढ़ जाता है। अब इससे कम व्यय करना है तो एक दिन सबको सखिया दे दी जाय और क्या कहा जाय। मोटर सालमें एक बार बदलते हैं। अब आप कहें कि उसी कार पर पांच साल तक चला जाय तो कैसे संभव है। इससे तो अच्छा होता कि हम लोगोंको

कैसरबागमें खड़ा करके गोली मरवा दीजिये। जब जीवनमें सुख नहीं, जब कबाड़ियोंकी भांति रहना है तब मर क्यों न जांय।

कहा जाता है कि हम अपनी प्रजापर कठोरताका व्यवहार करते हैं। यह आरोप सरासर झूठ है। कभी कभी जब घोड़ा, मोटर इत्यादि खरीदते हैं या विवाह या बड़ी दावत पड़ती है तभी उनसे विशेष रूपसे कुछ लिया जाता है। ऐसे अवसर सालमें कुल दस बारह आते हैं। इससे उनपर क्या कठिनाई होती है। उनका खर्च है क्या। उन्हें न सिनेमा जाना है, न थियेटर, न मंसूरी न शिमला न रोज कपड़े बदलने हैं। उन्हें रुपयेकी क्या आवश्यकता है? उन्हें जो बच जाता है वह बहुत अधिक है।

हम लोग पिशाच नहीं मानव हैं। कहा जाता है कि हम लोग नैतिक दृष्टिसे पतित हैं। यदि हम पतित हैं तो इन्द्र भी पतित हैं, अनेक देवता और ऋषि पतित थे। यदि गिलासमें विलास है, मनोरंजनमें पतन है, उदारतामें अपव्यय है, जीवनको सुखमय बनाना पाप है। राजभक्ति देशद्रोह तब तो कुछ कहना ही नहीं है। हम अवश्य अभिशापके भागी हैं।

किन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ अब हम वह नहीं रहे। अब हममें पहली सी नजाकत नहीं रही। अब हम अमीनाबादमें पैदल टहल सकते हैं। हम लोगोंमेंसे अधिकांश भाइयोंकी कमरका व्यास पांच फुटसे अधिक नहीं हैं। अब हम लोगों पर कर्ज भी अधिक नहीं है। मेरा ही हाल देखिये। केवल बाईस लाख कर्ज हमारे ऊपर है। देखिये कहांसे कहां हम आ गये।

महत्त्व के गुमनाम पत्र

इसलिए आपका कर्तव्य है कि हमारी रक्षा करें। नहीं तो हम सब लोग मोर्चा लेंगे। छतर मंजिलमें हमने प्रबंध किया है। प्रति दिन जाकर वहां डंड करते और बैठक लगाते हैं। सचेत हो जाइये।

आपका,
एक शुभ चिंतक

७

[यह पत्र मौलाना आजादको लिखा गया था। लिफाफेपर मुहर हैदराबाद सिंधकी थी। भीतर पता सक्खरका है। पत्र साहित्यिक तथा कठिन उर्दू में है। उसकी भाषा बदल कर पाठकोंकी सुविधाके लिए हिन्दी कर दी गयी है।]

सक्खर

२३ अगस्त, ४६

जनाब मौलाना साहब,

आदाब अर्ज है। मैं आपका एक सह-धर्मी हूँ;—आपकी पुस्तकें और आपके लेख पढ़ता रहा हूँ। आजसे नहीं बीसों वर्षों से। सन् १९१६ में जब आप 'अल हिलाल' निकालते थे तब आपके नोट पढ़कर तबीयत प्रसन्न हो जाती थी। तुरकीके सम्बन्धमें जो कुछ आप लिखते थे मुझे पढ़कर आपके इसलामके प्रति प्रेमका पता चलता था। इसलामी सलतनतका इतना बड़ा समर्थक भारतमें भी है यह जान कर आशा होती थी कि इसलामका भविष्य उज्वल है।

किन्तु अब देखता हूँ कि आपकी बुद्धि ठीक राह छोड़कर गलत रास्ते पर चलने लगी है। पहले तो हमारा यह ख्याल था कि आप नीतिवश कांग्रेसमें जा घुसे हैं। इस नीयतसे कि उसमें रह कर भीतर-भीतर मुसल-मानोंका लाभ करेंगे। अब जान पड़ता है कि आप सचमुच गुमराह हो

गये हैं। आप धोखे और बहकावेमें आ गये हैं! यह आप जान रखिये कि कांग्रेस हिन्दुओंकी संस्था है। उसे राष्ट्रीय नाम केवल दिखानेके लिए और ढोंग रचनेके लिए रख छोड़ा है। आपको मतलब साधनेके लिए कांग्रेसमें रख लिया है।

आखिर कांग्रेसमें रहनेसे आपका क्या लाभ हुआ। जेलमें जा-जाकर आपसमें लड़ते हैं। हमारे कायदे आजमको देखिये। वह कभी जेल नहीं गये। आपसे उनकी कम इज्जत है? जब बिना कष्ट उठाये इतना सम्मान मिल सकता है तब कष्ट उठानेसे क्या लाभ? देखिये हमारे कायदे आजमके लिए लोग बंगला बनवा देते हैं मकान खरीद देते हैं। कांग्रेस ने कितने बंगले आपको खरीद कर दिये हैं। जो अधिकार हम लोगोंको मिले वह कम नहीं और मिले आरामसे, मौजसे, बिना हाथोंमें हथकड़ियां पहने और बिना सिर पर डण्डा खाये।

मैं आपसे कहता हूँ कि अब भी समय है आप कांग्रेस छोड़कर लीग में शामिल हो जाइये। कायदे आजमके बराबर तो नहीं हाँ इसके बाद आपका ही नम्बर रहेगा। और पाकिस्तान बन जाने पर कायदे आजम जब हमारे शाहनशाह होंगे तब आपको हम लोग महा मन्त्री बना देंगे। आपको कांग्रेसकी भीतरी सब बातोंकी जानकारी है। आपके आ जानेसे हम लोगोंको उन सब बातोंका पता लग जायगा। आपको क्या कांग्रेससे कुछ मिलता है? इस बातका हमारा जिम्मा है कि आपको पांच हजार रुपये मासिक सदा मिलते रहेंगे। एक मोटर कार, एक बंगला कलकत्ता और एक शिमला, या नैनीताल, मंसूरी या दार्जिलिंग में बनवा दिया जायेगा। मैं लीग का सदस्य हूँ। मेरा काम केवल कांग्रेस और कांग्रेसियोंका विरोध करना है। मैं इतना

साहस रखता हूँ कि यदि कल कांग्रेस कहे कि पानी पीना आवश्यक है तो मैं जोरदार शब्दोंमें कहूँगा कि मुसलमानोंको तेल पीना चाहिये मैं यह नहीं देखूंगा कि संसार मुझपर हंसता है। मैं तर्क भी एकत्र कर लूंगा और कहूंगा कि पानी पीनेसे अनेक प्रकारके रोग होते है। मलेरिया, कालाजार, कालरा, इत्यादि। तेल पीनेसे किसी रोगका भय नहीं रह जाता। शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है और जुलाबकी भी आवश्यकता नहीं पड़ती।

आप क्या सचमुच इस बातकी चेष्टा कर रहे हैं कि भारतको स्वतन्त्रता मिल जाय। यदि ऐसी बात है तो इससे बढ़कर मुसलमानोंके लिए अपकार हो ही नहीं सकता। जहां तक केवल कहनेका सम्बन्ध है सो तो ठीक है। वह तो हम भी कहते हैं, हमारे नेता मिस्टर जिना भी कहते हैं। किन्तु हम मुसलमानोंका भला इसीमें है कि अंग्रेजोंका राज्य बना रहे। स्वतन्त्रता हो जानेपर सारी नौकरियां योग्यताके बलपर मिलेंगी, शिक्षा खोजी जायगी। जब बिना इन बातोंके हम लोग अपने रिश्तेदारोंको दारोगा, तहसीलदार, डिपटी कलक्टर बनवा लेते हैं तब पढ़ाई और परिश्रमसे क्या लाभ। अभी तो सरकारसे यह कहलाकर कि हम लोग शिक्षामें पिछड़े हैं, हम लोग अपना काम निकाल लेते हैं। हम लोगोंके लिए स्थान सुरक्षित रहते हैं। जब भारत स्वतन्त्र हो जायगा तब कौन हम लोगों को पूछेगा ?

आपको सम्भवतः ख्याल होगा कि कांग्रेसने हमारा बड़ा सम्मान किया है हमें अपना अध्यक्ष बना दिया है। हम आपको अध्यक्ष तो नहीं बना सकते क्योंकि अभी तक मुसलमानोंमें मिस्टर जिन्नासे योग्यतर कोई पैदा नहीं हुआ। इसलिए उन्हें छोड़कर कोई दूसरा हमारा अध्यक्ष नहीं हो

सकता। किन्तु आपको हम लोग कोई दूसरा पद दे देंगे। कितने लोग कांग्रेस छोड़ छोड़कर लीगमें आ रहे हैं। आपको भी अब आ जाना चाहिये। इतना भी कह देना चाहता हूँ कि यदि आप नहीं आयेंगे तो हम लोगोंके पास बहुत सी तरकीबें हैं। यह भी आपसे इसलिए कह रहा हूँ कि सीधे-सादे आप मान लें तो ठीक है।

यह तो आप जानते ही हैं कि हम लोगोंने यह घोषणा कर दी है कि लोग आपको मुसलमान न मानें। इसके कारण आपकी सारी प्रतिष्ठा नष्ट हो जायगी। इसके लिए आवश्यकता होगी तो मुल्लाओंके फतवे भी दिये जायंगे। आपको सबक लेना चाहिये कि हम लोगों से अपने बलपर क्या किया। मिस्टर गांधीका संसार में क्या स्थान है। जो लगोटी पहनते है, नंगे बदन रहते हैं। जरा कायदे आजमको देखिये केवल उनका सूट देखकर लोग उन पर लट्टू हो जाते हैं। उनके साथ आपको क्या मिलता होगा सोचकर दुख होता है। यहां तो दोनों समय मुर्ग मुसल्लम, रोगनजोश, रोगनी रोटी, जर्दा कुत्ते खाते हैं। कल मगरिबकी नमाजके बाद अल्लाह ताला और हजरत रसूलका ध्यान करके सोचिये और कायदे आजमसे एक पत्र लिखकर अपने पुराने कार्यों के लिए क्षमा मांगिये और आगे लीगके प्रति भक्तिका वचन दीजये। कायदे आजम अवश्य आपको क्षमा कर देंगे।

आपका,
एक शुभ चिन्तक

८

(निम्नलिखित पत्र मन्त्री—अखिल भारतीय हिन्दू महासभाके नाम है। जब वह कलकत्तेसे भाग रहे थे उस समय हबड़ा स्टेशनपर उनकी अटैची छूट गयी थी। उसमें बहुतसे कागज थे। उसीमें यह पत्र भी था। मेरे मित्र निताई चरन बोसकी कृपासे यह मिला है।)

अयोध्या
११-९-४६

माननीय मंत्री महोदय, प्रणाम !

आप हिन्दू सभाके मन्त्री हैं। हिन्दूधर्म रूपी प्रासाद ६ खम्भोंपर टिका है। वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, तथा भागवत पांच यह हुए और छठें आप हैं। जो महत्त्व इन पांच पोथियोंका है वही आपका भी है। हिन्दू धर्मसे आपका इतना सामंजस्य हो गया है कि आपका नाम उसीमें लीन हो गया है। बहुत कम हिन्दू ऐसे हैं जो आपका नाम न जानते होंगे। वेद और पुराणके लेखकका नाम कौन जानता है। हां आपने ऐसा ऐसा मन्त्र फूँक दिया है कि जब कोई चुनाव उपस्थित होता है तब देशके अनेक कोनोंकी हिन्दू-सभा जाग जाती है। और एक न एक सदस्य असेम्बलीके लिए अथवा मनुसपलटीके लिए खड़ा हो जाता हैं। इससे हिन्दू-धर्मका प्रचार हो जाता है। लोग यह जानने लगते हैं कि हिन्दू-नामकी वस्तु संसारसे लोप नहीं हो गयी है। रह गयी सफ-

लताकी बात। आप हिंदू हैं इसलिये भगवान कृष्णकी इस बातको कैसे भूल सकते हैं कि हमारा कर्तव्य केवल कार्य करना है। परिणामकी बात सोचना नहीं।

एक बार मैंने यह मूर्खता की कि देखूं हिन्दू सभाने क्या क्या काम किया है। प्रान्तीय हिन्दू महासभाके मन्त्रीके पास पत्र लिखा, नगर हिंदू-महासभाके नाम पत्र लिखा किन्तु जान पड़ता है उन दिनों भारत सरकारने टिकट छापना बन्द कर दिया था। और कागजकी मिलें भी बन्द थी इसलिए उत्तर देना इन लोगोंके लिए असम्भव था। इसीलिए कोई उत्तर कैसे मिलता है।

आपको एक बातके लिए अवश्य बधाई देता हूं कि हिन्दू-सभाने सभी नगरोंमें, प्रान्तमें तथा देशमें अपना प्रधान ऐसे व्यक्तिको बनाया है जिसने सन् सत्तावनका गदर देखा है। ऐसे अनुभवी व्यक्तियोंके हाथमें हिंदू सभा रूपी नौकाका डांडा रहनेसे समाजकी प्रगति बड़ी स्थिर गतिसे हो रही है। शीघ्रतामें भय रहता है इससिए ऐसे लोगोंको आपने सभापति बना रखा है जिससे किसी प्रकारकी आशंका, किसी प्रकारकी उद्विग्नता प्रस्तुत न हो। देवताओंकी भांति यह उपदेश देते रहें, तपोमयी वाणीका रस कानोंमें भरते रहें, और उनकी पूजा करते रहें, प्रशंसाके गीत गाते रहें, उनका संदेश कभी-कभी आकाशवाणीके समान श्रद्धा, शांति, तथा भक्तिसे सुनते हैं।

एक बातका और मुझे बड़ा खेद है जिसे आपके सम्मुख उपस्थित कर देना अपना कर्तव्य समझता हूं। जितनी विशाल संस्थाएँ भारतवर्षमें हैं, कांग्रेस, मुसलिमलीग इत्यादि सबके मन्त्रियोंके चित्र समाचारपत्रोंमें, छपते हैं। किन्तु आपका चित्र कहीं नहीं छपता। कहींकी हिंदू सभाके

मंत्रीका चित्र नहीं छपता, क्या बात है। इस असीम, अनन्त विनम्रतासे कितनी हानि हम लोगोंकी हो रही है। आपका तथा और भी हिंदू-सभाके मंत्रियोंके प्रधानोंका चित्र छपता तो हम लोग उसे ठाकुरजी मूर्तिके बगलमें टांगते। सबेरे उसका दर्शन करते और जीवनको सुखी बनाते। लीगी लोगोंकी भांति अज्ञातमें रहना तो उचित नहीं है। आपको जनताके हितके लिए कभी-कभी प्रकट होना चाहिये।

और संस्थाओंके मन्त्री नगर-नगर गांव-गांवका चक्कर लगाया करते हैं, भाषण दिया करते हैं, अपने सिद्धान्तोंको माननेवालोंको जाग्रत किया करते हैं। हम यह जानते हैं कि ऐसा करना उचित नहीं है। रेलोंको पैसा देना, भाषण सुनाकर दूसरोंका समय नष्ट करना उचित नहीं है। इसीलिए हिंदू-महासभाका सिद्धान्त आपने यह बनाया है कि कोई कहीं न जाय। किसी प्रकारका दौरा न किया जाय। हिन्दू-धर्मका प्रचार क्या? जिस धर्मको स्वयं ईश्वरने अज्ञात रेडियोसे विशेष करके ऋषियोंके हृदयमें भर दिया, जो सृष्टिके आरम्भमें ही जगत्में आया और सृष्टिके अन्त तक रहेगा उसके लिए प्रचार क्या। जब ईश्वरने स्वयं कह दिया है कि जब-जब धर्मकी महत्ता कम होने लगेगी तब-तब मैं स्वयं आ जाऊँगा तब मनुष्य क्यों विचलति हो, मूर्खतापूर्ण समयकी बरबादी करे। जिसकी रक्षाके लिए स्वयं भगवान् तैयार हों चारों हाथोंसे उसे किस बातका भय है। थोड़ी देरके लिए मान लीजिये कि कुछ लोग आज मुसलमान धर्मकी सुन्दरता देखकर उनकी वीरतासे आकृष्ट होकर उसकी दीक्षा ले लें तो घबरानेकी क्या बात है। थोड़ा सन्तोष करना चाहिये। भगवान् पधारनेवाले हैं, आर्येंगे तब फिर हिन्दू हो जायेंगे। चिन्ता क्यों।

एक मित्र मुझसे पूछने लगे कि हिंदूसभाने अछूतोंके लिए क्या किया। मैंने आपकी ओरसे उन्हें उत्तर दे दिया। यह दूसरोंका काम

नहीं है। ईसाई लोग अछूतोंके लिए इतना कर ही रहे हैं, महात्माजी भी ध्यान दे ही रहे हैं, कांग्रेस उनके लिए सब कुछ कर ही रही है। ऐसी अवस्थामें हन लोगोंके काम स्वयं करने लगना बहुत ही अनुचित है। आप अवश्य ही मुझसे सहमत होंगे कि बहुत अच्छा किया जो हिन्दू-सभाने इस ओर कुछ नहीं किया नहीं तो आपसमें मनमुटाव हो जाता। स्त्रियोंके वेद इत्यादि पढ़ानेके सिद्धान्तके सम्बन्धमें भी आपने तथा देशकी सभी हिंदू-सभाओंने चुप रहकर बड़ा अच्छा काम किया। स्त्रियोंको पढ़ाना और वह भी वेद! यह भी कोई बुद्धिमानी है। आशा है शीघ्र ही हिंदू-सभाकी ओरसे पूज्य मालवीयजी तथा हिंदू विश्वविद्यालयपर अविश्वासका प्रस्ताव पास करेंगे।

हिंदीके सम्बन्धमें भी आपने बहुत अच्छी नीति बरती है। कुछ नहीं कहा। कुछ नहीं बोले एक तो हिन्दुस्तानीका विरोध न करके आपने व्यर्थका कांग्रेससे झगड़ा नहीं मोल लिया, मुसलमानोंको नाराज नहीं किया। हिंदू सभासे हिंदीसे मतलब ही क्या? तुलसीदासने गलतीकी तो क्या सब लोग गलती करें। हिंदीका प्रश्न उठाकर हिंदू सभा कभी गलती न करे।

हिंदू सभाका कोई अखबार न निकालकर आपने बड़ी दूरदर्शिताका काम किया है। जिस धर्ममें वेद, पुराण, गीता, मनुस्मृति ऐसी पुस्तकें हो वह अखबार निकाले इससे बढ़कर बेअदब कौन हो सकता है।

आपके कामसे हिंदू जनताको बड़ी प्रसन्नता है। सचमुच आप इस युगके हिंदुओंका नेतृत्व कर रहे हैं।

आपका
एक हिंदू

महत्त्व के गुमनाम पत्र

६

[निम्नलिखित पत्र हमारे प्रान्तके प्रधान-मन्त्री गोविन्द वल्लभ पन्तके नाम किसीने भेजा था। भेजनेवालेका नाम नहीं था। यह पत्र उन्होंने अपने मित्रोंको दिखाकर एक मित्रको दे दिया था। उन्हींकी कृपासे यह प्रकाशित हो रहा है !]

प्रयाग

१३-६-४६

माननीय प्रधान मन्त्री महोदय,

पर्वतोंमें जैसे ऊँचा हिमालय है, पठारोंमें जैसे तिब्बतका पठार है, वैसे ही हमारे प्रान्तकी असेम्बलीमें आप हैं। यह दूसरी बार इस प्रान्तके आप प्रधान मन्त्री हुए हैं इसलिए हम लोगोंको पूरी आशा है कि जो कार्य पहले मन्त्रिमण्डल पूरा नहीं कर सके अब वह इस बार पूरा हो जायगा। मैं एक ऐसा व्यक्ति हूँ ! पहले मैंने समझा था कि आप बड़े अच्छे गानेवाले, नाटककार और कहानी लेखक हैं। इसलिए समझा था कि जिस भाँति एक शिक्षक अपनी योग्यता तथा परिश्रमके बलपर शिक्षा मन्त्री हो गये उसी भांति एक साहित्यकार अपनी कविताके बलपर प्रधान मन्त्री हो गये। किन्तु पता चला कि वह गोविन्द वल्लभ पन्त दूसरे हैं। यह नशा टूट जानेसे मुझे बहुत धक्का लगा किन्तु क्या करता। सोचता था कि असेम्बलीमें कविता सुनायी पड़ेगी किन्तु अब तो शुष्क भाषण ही सुनायी पड़ते हैं।

भाषणकी बातसे अनेक पुरानी स्मृतियाँ जाग्रत हो गयीं। चुनावके पश्चात् तथा पदग्रहणके पूर्व आपके श्रीमुखसे यह आशा दिलायी गयी थी कि प्रान्तमें कोई आदमी भूखा नहीं रह सकता। उस समय मैं इतना नहीं समझ सकता था कि राजनीतिक महापुरुष इतना तौलकर बोलते हैं। आपने यह कभी नहीं कहा था कि आधे पेट भोजन मिलेगा। आपने केवल यह वचन दिया था कि कोई भूखा नहीं मरेगा। और इस समय सबको भोजन कुछ न कुछ मिल ही रहा है। पेटभर देनेकी आपने प्रतिज्ञा नहीं की थी। गांवोंसे आपने अन्न एकत्र किया और इस प्रान्तके पुरुषों और स्त्रियोंको जीवित रखा इसके लिए हम लोग धन्यवाद देकर आपके इस पुण्यकार्यकी छीछालेदर नहीं करना चाहते। एक बात और याद आ रही है। आपने कहा था कोई मनुष्य भूखा नहीं मरेगा। पशुओंकी बात उसमें नहीं थी। फिर यदि खली नहीं मिलती और गायें क्षीण होते-होते पशु चिकित्साके एक विद्यार्थियोंके लिए ठठरीका माडल बन रही हैं तो आपको हम दोषी नहीं ठहरा सकते।

बहुत दिन हुए कथा सरित्सागरमें कहीं पढ़ा था कि एक कर्मचारीको किसी राजाने दण्ड देनेकी व्यवस्था की। दूसरे दिन राजाके दरबारी चकित हुए जब उसको एक ऊँचा पद दिया गया। पीछे राजाने समझाया कि स्वर्णकी शृंखला लोहेकी जंजीरसे अधिक शक्तिशालिनी होती है। आपने आश्वासन दिया था कि ४२ में अथवा और भी समय जिन सरकारी कर्मचारियोंने जनताको कष्ट दिया हैं उन्हें दण्ड दिया जायगा वह सभी अच्छे अच्छे पदोंपर सुशोभित हैं, आनन्द-सागरके उत्ताल तरङ्गोंपर झूला झूल रहे हैं। इस प्रकार आपने उन्हें दया, क्षमा, विस्मृतिके पाशोंसे बांधकर महात्माजी प्रसारित अहिंसा सिद्धान्तका ही पालन आपने

नहीं किया वरन् परोक्ष रूपसे आपने भारतीय जनताको धीरजके धर्मकी दीक्षा दी है।

हमारे नगरमें छुरेबाजीकी घटनाएँ नित्य प्रति हो रही हैं। किंतु यह छोटी-सी बात है। मेरठमें आप दौड़ कर गये गृह सचिवके साथ, और वहां शान्ति स्थापित हो गयी। सर्वे पदाहस्ति पदानिमग्ना। जो शालिग्राम भूनकर खा सकता है उसे भण्टा भूननेमें क्या देर लगती है। जब मेरठ की गड़बड़ी ठीक हो गयी तब और नगरोंमें क्या रखा है। कोई बात नहीं है। पुलिस प्रबन्ध जिंदाबाद। शांति रखी है।

सुना है, पत्रों द्वारा, सच झूठको राम जाने, हमारे पड़ोसकी नगरी काशीमें दशहरामें लोगोंको चीनी नहीं मिली, मुहर्रममें हमारे बिरादरानके लिए इसका अच्छा प्रबन्ध था। सम्भव है इसकी शिकायत आपके पास लोग ले गये हो। किंतु उन लोगोंने तहकी बात नहीं समझी होगी। मैं जहाँ तक समझता हूं इसमें बहुत ही मनोवैज्ञानिक तथा शारीरिक सिद्धान्त निहित हैं। दशहरा आनन्दोत्सव है। आनन्द मनानेसे और आनन्दकी मनोवृत्ति होनेसे शरीरकी ग्रन्थियोंसे एक रस निकलता है जिससे शरीरमें उष्णताकी इकाईयां (हीट कैलोरीज) बहुत बढ़ जाती हैं। उस समय अधिक चीनी यदि रक्तमें पहुँच जांय तो रक्त चाप बढ़ सकता है। उससे मनुष्य अस्वस्थ हो सकता, मर सकता है और प्रांतकी जन शक्ति (मैन पावर) कम हो सकती है। मुहर्रम शोकका त्योहार है। लगातार रोनेसे तथा छाती पीटनेसे शरीरकी ग्रन्थियां शिथिल हो जाती है, ठीक रस (हारमोन्स) नहीं बनते। रक्त चाप गिर जाता है। ऐसे समय चीनीका अधिकसे अधिक प्रयोग मनुष्यके जीवनके लिये आवश्यक होता है। इसीलिए ताजियेपर शरबत और शीरीनी चढ़ायी जाती है। अब यदि

ऐसे समय उदारतासे चीनीका विवरण न होता तो एक शक्तिशाली अल्पसंख्यक समुदायके शारीरिक ह्रास होनेका भय था। जिससे साम्प्रदायिक समस्या और उलझ जाती और देशमें घरेलू युद्धकी आशंका हो जाती।

मैं समझता हूँ जिस कार्यकर्ताने इतनी दूरदर्शितासे व्यवस्था की थी उसे इस प्रान्तका प्राविशियल फूड कण्ट्रोलर बना देना चाहिये।

एक बात और, यद्यपि आप वह गोविंदवल्लभपंत नहीं हैं जो अपने सुकुमार गले और नाटकोंके लिये प्रसिद्ध हैं फिर भी नामका प्रभाव तो होता ही हैं। आपके प्रधान मन्त्रि-पदपर पहुँच जानेके कारण सुना जाता है अधीनस्थ कर्मचारियोंमें नाटकी प्रवृत्ति आ गयी है। जब उनके समीप जनताका कोई किसी कार्यके लिये जाता है तो कोई नृत्य करता है कोई भांडोंका अभिनय करता है और कोई स्वराज्य शासनकी स्तुति करने लगता है यह लोग इस कारण अभिनयकला प्रदर्शित करनेके लिये पुरस्कृत होने चाहिये। प्रांतकी ओरसे एक नाटकका आयोजन करना चाहिये। असेम्बलीभवनमें ही और इन लोगोंको वहां अभिनय करनेके लिये बुलाना चाहिये। ऐसी प्रस्फुटित प्रतिभा क्यों मुरझाय।

आपके प्रांतमें ऐसी-ऐसी विभूतियाँ हैं कि उनका वर्णन किया जाय तो कई महाभारत तैयार हो। विशेषतः सरकारी कर्मचारी तो ऐसे हैं जिनके सम्मुख सचाईमें हरिश्चंद्र, इमानदारीमें भरत, और मर्यादामें राम पानी भर सकते हैं। ऐसे महानुभावोंके लिए मैं बधाई देता हूँ।

विनयावनत—
एक प्रयागवाल

१०

[*यह पत्र बरोज साहबजीने जो बंगालके गवरनर हैं अपने खुफिया विभागको दिया था। खुफिया विभागने लिपिके विशेषज्ञको दिया था जहांसे यह खो गया। बंगालके प्रसिद्ध व्यापारी रैली ब्रदर्सके यहां फिर यह पाया गया जहांसे संकलन कर्ताको मिला*]

मैमनसिंह,

२३, १०, ४६

श्रीमान गवरनर बहादुर महोदय,

जबसे हम लोगोंने, बङ्गालके निवासियोंने सुना कि आप इस सुजला, सुफला, शस्य श्यामला भूमिपर पधार रहे हैं बड़ी प्रसन्नता हुई थी। आप मजूर सरकारके प्रतिनिधि हैं यह जान कर और भी प्रसन्नता हुई। हम लोगोंने यह भी सोचा था कि केला और नारियल जो बङ्गालके प्रतिनिधि फल हैं आपको भेंट किया जाय किन्तु खेद है कि अभी अवसर नहीं मिला मजूर सरकारके प्रतिनिधिसे हम लोगोंको सदा प्रसन्नता होती है। मजूर सरकारके एक प्रतिनिधि एक बार यहां वायसराय थे। लार्ड चेम्स फोर्ड। उनके समयमें भारत तथा पंजाबमें ऐसी अनेक घटनाएं हुईं जिससे जान पड़ा कि ब्रिटिश राजमें बड़ी बड़ी शक्ति है। बड़े बुद्धिमान शासक थे वहाँ। यदि उन्होंने ऐसी कड़ी काररवाइयां न की होती तो ब्रिटिश साम्राज्यका विनाश हो गया होता। किंतु वह तो कहिये उनकी बुद्धिमानी

कि उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यकी रक्षा कर ली। जान पड़ता है इस महान् कार्यके बाद उन्होंने समाधि ले ली। राजनीतिक क्षेत्रमें वह नहीं आये। यह तो नियम ही है कि किसी बड़े कार्यके सम्पादनके पश्चात् लोग संसार से विरक्त हो जाते हैं।

मजूर सरकारके दूसरे प्रतिनिधि आप हैं। सुना जाता है कि पहले आप इंगलैंडके वाटरलू स्टेशन पर कुलीका काम करते थे। ऐसा ही व्यक्ति शासनके भारी बोझको ढो सकता है। भारत मन्त्रीने आपको इस पदके लिए चुनकर बड़ी बुद्धिमानीका परिचय दिया है। एक प्राचीन युगमें भारतके एक प्रांतमें एक राजा राज्य करते थे। उनका एक पांव अंगेठीकी आगमें भुना करता था और दूसरा पांव सुन्दर सुकुमारियोंके कर कमलोंमें रहता था। न सुखसे मतलब न दुखसे सरोकार। यह जानकर प्रसन्नता ही नहीं आनन्द होता है कि आप राजा जनकसे भी अधिक सिद्ध और योगिराज हैं। आपकी सिद्धि असीमताकी उस सीमातक पहुँच गयी है जब आपके कानके निकट भी गोलियोंकी गड़गड़ाहट हो, भयानक आर्तनादका स्वर हो फिर भी आपको सुनाई नहीं दे सकता। छुरोंकी चम चमाहट और आगकी लपटें तो आप देख नहीं सकते क्योंकि आपके नेत्र बन्द हैं। आप समाधिस्थ हैं और आपका प्राण ब्रह्माण्डमें स्थित है। ज्योंही आपका देश आपकी महत्ताको समझ लेगा आपकी पूजा करनेको तैयार रहेगा।

समाचार पत्रोंमें छपा है कि बङ्गालमें कुछ दुर्घटनायें हो रही हैं कुछ लोग लूटे गये हैं, कुछ घर जलाये गये हैं स्त्रियोंपर बलात्कार हुआ है। हमें तो इसमें विश्वास कम होता है। कम क्या, नहीं होता। जान पड़ता है कुछ कवि लोग अपनी प्रतिभा पर पालिश करनेके लिए ऐसी कल्पनाएँ गढ़ रहे हैं। ब्रिटिश शासन निष्पक्ष, उसमें मजूर शासनके प्रति-

निधि। आप तो निष्पक्षताके उसी भांति औतार है जैसे महात्मा बुद्ध।

मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ जो नित्य प्रातः काल आपका नाम एक सौ आठ बार जपता हूँ! आपका चित्र नहीं है नहीं तो सबेरे उसका दर्शन भी करता यदि आप एक भेज दें तो बड़ा अनुग्रह होगा। सुनता हूँ आप एक वैधानिक गवरनर हैं। आज आपकी महती कृपासे विधानका अर्थ समझमें आ गया। ब्लंट शिलीने, बिलसनने, डाइसेने, डनिंगने विधानका कुछ और अर्थ लिखा विधानका अर्थ आजकल यह हो गया है कि गांव भस्म कर दिया जाय, जबरदस्ती धर्म बदल दिया जाय, स्त्रियां भगा दी जायं और लोग लूट लिए जायं। लोग जो चिल्लाते हैं उन्हें कृपया क्षमा कर दीजिये। नया अर्थ उन्हें मालूम नहीं हैं इधर कोई नया कोश विलायतसे आया नहीं। नयी पुस्तकोंकी छपाई कम हो रही है। शब्दोंके अर्थोंमें परिवर्तन होता रहता है यह तो सभी जानते हैं। मेरे एक मित्र हैं सीधे सादे आठवीं तक अंग्रेजी पढ़ी है। एक दिन संध्या समय कहने लगे लड़ाई के बाद अंग्रेजी भाषामें भी बहुत परिवर्तन हो गया। मैंने पूछा तो क्या? बोले शब्दोंके अर्थ बदल गये। मैंने कहा क्या बदल गया उन्होंने कहा जब मैं पढ़ता था तब 'फायर'-माने आग होता था अब फायर माने पानी होता है मैंने आश्चर्यसे पूछा यह किसने कहा उन्होंने कहा—'मैं कल आसनसोलसे कलकत्ता जा रहा था स्टेशनपर एक लोहेके छड़से कई बालटियां लटक रही थीं। उनके बाहर लिखा था 'फायर'। मुझे कुछ अचंभा हुआ कि आग क्यों लिखा है। मैंने जाकर देखा तो बालटियोंमें पानी भरा है।' इस घटनासे मैं समझ सकता हूँ कि विधानका अर्थ भी अब इस युद्धके बाद बदल गया होगा इसके पहले विधानका जो भी अर्थ रहा हो और राजनीतिक पंडित जो भी समझते रहे हों अब लोगोंको इसका अर्थ स्पष्ट हो गया होंगा।

महत्त्व के गुमनाम पत्र

आपने सारा अधिकार अपने मंत्रियोंको दे दिया है। इससे बढ़कर भारतको स्वतंत्रता देनेका प्रेमी और कौन हो सकता है। और ठीक ही जब भारतवासी स्वतंत्रता मांगते हैं तब सब प्रकारकी स्वतंत्रताकी साधना करनी ही होगी। जो लोग जिससे प्रेम करते हैं उसके लिए कितनी कठिनाइयां उठाते हैं। स्वतंत्रताका जितना अनुभव आपको कृपासे हो गया उतना कभी नहीं हुआ। शायद आपका यह अभिप्राय हैं कि स्वतंत्रता इतनी कटु है; आप लोग जिसके लिए इतना प्रयत्न कर रहे हैं। ठीक ही है। यदि आप न हों तब तो सारे भारतमें अराजकता हो जायगी। सब नगर जला डाले जायेंगे; एक धर्म वाले दूसरे धर्मवालोंको खा जायंगे।

बंगालकी घटनाओंसे पता चलता है कि अंग्रेजोंका भारतमें रहना बहुत आवश्यक है। जैसे बिना शराबका शायर नहीं हो सकता, बिना जेल गये देश भक्त नहीं हो सकता उसी प्रकारसे बिना अंग्रेजोंके भारतमें शान्ति नहीं हो सकती। हम समझते हैं कुछ-कुछ तो भारतवासी समझ गये होंगे किन्तु पूरी तरहसे नहीं। कुछ ऐसा होना चाहिये कि भारतवासी कहने लगें कि आप तशरीफ न ले जांय। यहीं रहें। इसके लिए क्या आप कुछ लोगोंका एक मंडल नहीं बना सकते जो इस बातका प्रचार करें कि भारतसे अंग्रेज लोग न हटने पायें। यदि इस समय आपने ऐसा कुछ नहीं किया तो बहुत डर है कि भारतसे अंग्रेजोंको प्रस्थान कर देना पड़ेगा।

इतिहासमें आपका नाम अमर हो गया आप चिंता न करें। वारेन-हैस्टिंज और क्लाइवका नाम अब अकेले नहीं लिया जायगा। आप बड़ों के साथ हैं इसके लिए आपको बधाई है।

आपका

.....

महत्त्व के गुमनाम पत्र

११

[नीचे लिखा हुआ पत्र अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके सदस्य द्वारा मुझे मिला है। यह पत्र श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितको किसीने लिखा था। उनके पास बहुतसे लोग जिनसे उनका परिचय नहीं है, पत्र लिखा करते हैं। उन पत्रोंमें क्या लिखा रहता है इसका मुझे ज्ञान नहीं है। इसमें जो लिखा है वह पाठकोंके सामने है।]

कानपुर

.....

महोदया,

मैं भारतके उन व्यक्तियोंमें हूँ जो नेहरू परिवारसे विशेष अनुराग रखता हैं। पण्डित जवाहरलालको मैं देवताके समान मानता हूँ। स्पष्ट ही है कि पण्डित मोतीलाल जबतक जीवित रहे मैंने उन्हें महादेव ही समझा। आपके प्रति मेरे हृदयकी वही भावना है जो एक आराधककी होती है। मैं नित्य आपके नामकी माला आपके चित्रपर चढ़ाता हूँ। दूसरे दिन वह माला फेकता नहीं एकत्र करता जाता हूँ। मैंने सोचा था कि इस बार कांग्रेसके अधिवेशनमें प्रदर्शिनीमें उसे रखूँ—किन्तु इस बार प्रदर्शिनी होगी नहीं इसका मुझे अपार दुख है।

आप दो बार हमारे प्रान्तकी मंत्रिणी चुनी गयीं। संसारके किसी देशकी किसी महिलाको यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। इस विभागमें

जितनी तत्परतासे सुधार हो रहा है वह आपके नेतृत्वका परिणाम हैं। इस बार तो मैंने समझा था कि म्युनिसपलटियां स्वर्गके समान हो जायँगी, किंतु अधिक महत्वके कार्यवश आपको अमरीका चला जाना पड़ा और म्युनिसपलटियां अनाथ हो गयीं। आपने ठीक ही समझा कि अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य ठीक हो जाय तब देश और नगरका स्वास्थ्य ठीक होते देर नहीं लगेगी।

मैं ज्योतिषी तो नहीं हूँ किंतु ऐसा जान पड़ता है कि उस जन्ममें आप पहलवान थीं। अमेरिका जाकर जिस प्रकार आप लड़ रही हैं उस प्रकार पहलवानके सिवाय और कौन लड़ सकता है। जब बड़े-बड़े फील्ड-मार्शल आपके सामने चित हो गये तब साधारण लोगोंकी बात क्या है। आपके भाई साहब इधर कायदे आजमसे लड़ रहे हैं आप उधर स्मट्ससे लड़ रही हैं इस ऐतिहासिक दंगलके लिए कोई ऐसा अखाड़ा होता जहां हम लोग भी देखते तो लोचनोंको सफल करते।

आपने फोटो उतारनेवालोंको डांटा भी था। इसमें फोटो उतारनेवालोंका अधिक दोष नहीं था अमरीकाके निवासी महान व्यक्तियोंको महान घटनाओंका स्मरण सदा रखना चाहते हैं। उन्हें स्मृति-चिन्होंसे बड़ा प्रेम है। पहले पहल जब कोन मेरी जहाज वहां पहुँचा तब लोगोंने उसकी कँटिया तक उखाड़ ली। मुझे तो डर था कि कहीं आपकी स्मृति चिरस्थायी बनानेके लिए आपकी निजी वस्तुएँ भी लोग झटकने न लगें। आपका चप्पल ह्वाइट हाउसमें बड़े आदरसे रखनेके लिए लोग तैयार हो जाते और आपकी साड़ीका एकाध फोना प्रेसिडेंट ट्रूमनको मिल जाता तो वह अपनी प्रेसिडेंटीको सफल मानते। आपने जब यह कहा कि मैं कोई आकर्षण करनेवाली बालिका नहीं हूँ तब लोगोंको विश्वास नहीं

हुआ। और विश्वास भी कैसे हो सकता है। जिसने सारे भारतको मोह लिया हो और संसारके दूसरे भागको विमोहित कर रहा हो वह ऐसी बात कहे तो किसे विश्वास हो सकता है।

आपके शिष्ट व्यवहारकी इस देशमें बड़ी प्रशंसा है! जो लोग आपसे मिलने जाते हैं वह आपसे हुत ही प्रसन्न होकर लौटते हैं। एक महिलाको इतनी ही मृदुभाषिणी और सौजन्यपूर्ण होना शोभा देता है। और मंत्री हो जानेपर आपसे जो जनताका सम्पर्क हो रहा है उसमें इन आवश्यक गुणोंकी जो आवश्यकता है उसे आपने पूर्णतः निर्वाह किया है इसके लिये धन्यवाद।

आपका
एक भारतीय

१२

[संसारके संपादक श्री अशोकजी गत वर्ष हैदराबादकी रियासतमें पत्रकारोंके प्रतिनिधि बनकर गये थे। वहां किसीने नीचे लिखा सर मिरजा इसमाइलके नामका पत्र उन्हें दिया था। वह जानते थे कि मैं ऐसे पत्र एकत्र कर रहा हूँ, इसलिये उन्होंने मुझे दे दिया। मैं अंग्रेजी पत्रका हिन्दी अनुवाद दे रहा हूँ]

अकोला
९-१-४६

जनाब मिर्जा साहब,

भारतवर्षकी बिसातमें जहां अनेक गोटियां हैं, वहां आप भी एक महत्वपूर्ण गोटी हैं। जिस रियासतमें आप रहते हैं वैसी ही चाल चलते हैं। सीधी भी, टेढ़ी भी और ढाई घर वाली भी! शिष्टता तथा शालीनतामें आपकी ख्याति है और आश्चर्य नहीं कि इन गुणोंके कारण आपके बहुतसे मित्र भी हैं। मैसूरके गत महाराजके आप सहपाठी थे। यह घटना वैसी ही विख्यात है, जैसे कृष्ण और सुदामाकी एक गुरुकुलमें पढ़नेवाली बात। जैसे एक बार जो मूंछे मुड़ा लेता है वह सदा मुड़ाता ही रहता है, उसी प्रकार एक बार जो देशी रियासतमें दीवान बन जाता है वह सदा दीवान ही बनता है। आप मैसूरके दीवान हुए, वहाँ क्या किया आपने? बहुत कुछ किया। कागजोंपर दस्तखत किया। राष्ट्रीय भावना कितनी आपने जगायी कोई कैसे बता सकता है। राष्ट्रीय इतिहास

ही नहीं लिखा गया है। इसलिए कोई कैसे कुछ कहे। जैपुरमें आप दीवान हुए। शाहजहांकी रूह आपमें उतर आयी। आपने सड़क और घर बनवाये। ठोस कार्य करनेका आपको अभ्यास है इसलिए यहां भी ठोस कार्य आपने किया। शिक्षाके आप महान प्रेमी हैं। कई बार आपने विश्वविद्यालयोंमें दीक्षांत भाषण किया है। 'नाना पुराण, निगमागम' आपके भाषणोंमें उसी प्रकार मौजूद है जैसे घीमें बनस्पती व्याप्त है। किंतु शिक्षाका प्रसार जैपुरमें कितना हुआ। इसके उत्तरदायी आप हो भी कैसे सकते हैं। आप ईंटे ले जाकर स्कूलके भवन तो बना नहीं सकते थे। इसके लिए तो दूसरे लोग ही जब आपको सहायता देते तब संभव था।

मुझे यह भी मालूम है कि आप धार्मिक विचारोंमें बड़े उदार है। हिंदू मुसलिम मेलके आप सदा पक्षपाती रहे हैं। मुसलिम लीगका कभी आपने विरोध किया हो ऐसा कहीं पढ़नेमें नहीं आयेगा किन्तु सब बातें तो छपती नहीं। यही कब छपा कि महात्मा गांधीकी बकरी किशमिशका जलपान करती है।

आपने हैदराबाद रियासतमें पदार्पण किया। वहांकी और घटनाएं तो इस समय अभी ज्ञात नहीं है; किन्तु आप पुरातत्वके कितने प्रेमी हैं इसका पता लग गया। बहुत दिनोंसे यह प्रश्न छिड़ा हुआ है कि बरार हैदराबादमें मिला दिया जाय। आपने इस प्रश्नको बड़ी सरलतासे हल कर दिया। पुरानी बातोंको मानना सभी समझदार आदमियोंका काम है। पुराने युगकी ओर लोग लौटना चाहते हैं। बरार भी पहले निजामका था। उन्हींको लौट जाना चाहिये। मैं पुरातत्व प्रेमी हूँ। जब प्राचीनतासे प्रेम ही करना है तब डेढ़ दो सौ बरससे क्या प्रेम किया

जाय और पहलेसे प्रेम करना चाहिये। युधिष्ठिरके समयका भारतवर्षका नकशा मेरे सामने नहीं है। सुना है डाक्टर प्राणनाथको मिलनेवाला है खोज रहे हैं। किंतु कुछ लोगोंके परिश्रमसे अशोकके समयका नकशा हमारे सामने है। उस समय बरार किसका था, हैदराबाद किसका था। उसको मिलना चाहिये, जिसका था पुराने समयमें, उसको आप लौटा दें। किंतु आप कह सकते हैं कि बौद्ध लोग भिक्षु हैं वह शासन करनेमें संकोच करेंगे। तो चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यके समयमें बरार और हैदराबाद जिसका रहा हो उसीको लौटा दीजिये। प्राचीनसे प्राचीन जिस नकशेपर आपको विश्वास हो, लांगमैन कंपनीका, मैकमिलन कंपनीका, ब्लैकीका, जिस कंपनीके नकशे पर आपका विश्वास हो उसके अनुसार आप बरार-हैदराबाद भी लौटा दें। आशा है आप ऐसे न्यायप्रिय गृह-सचिवको यह प्रस्ताव स्वीकार होगा और बरारको हैदराबादमें मिलानेकी मांगकी ऐतिहासिक बुनियादको आप फिरसे सोचेंगे और इतिहासको एक बार फिरसे पढ़ जांयगे।

यदि आप ऐतिहासिक आधारकी बात छोड़ दें और राजनीतिक आधारपर बरारको हैदराबादमें मिला लेना चाहें तब तो ठीक ही है। अवश्य बरार और मध्यप्रांतको भी हैदराबाद रियासतमें मिला लेना उचित है। क्योंकि बरारमें हिंदू अधिक हैं। हैदराबादमें भी अधिक हैं और हिंदू जनताके लिए हैदराबाद राज्यमें बहुत न्याय होता है। आपने अनेक अवसरोंपर कहा है कि हिंदू मुसलमान एक भारतकी संतान हैं। कोई भेद-भाव नहीं है। अवश्य ही आप ऐसे महान पुरुष जो कहते हैं वह करते होंगे। और जबसे आपने हैदराबाद राज्यमें शासन भार ग्रहण किया है तबसे वहांसे हिंदू मुसलमानोंका भेदभाव हट गया होगा। शासनके प्रत्येक विभागमें अब वहां केवल मुसलमान ही न रह

गये होंगे ? जो केवल दस प्रतिशत हैं। आपके विवेकपूर्ण भाषणों और न्यायसे ओत प्रोत कथनोंके अनुसार बहु संख्यक हिंदुओंको वहां पहलेकी भाँति हीनावस्थासे उबार लिया होगा और भारतके सभी हिंदू हैदराबादमें आपके हाथों अपनी समुचित भलाई देखकर स्वयं हैदराबादके शासनमें सम्मिलित होनेके लिए उत्सुक होंगे।

एक विनती आपसे यह है कि शीघ्र ही हैदराबादके शासनकी एक रिपोर्ट प्रकाशित कर दें जिससे बरारकी जनता स्वयं हैदराबादमें सम्मिलित होनेके लिए लालायित हो जाय और राजनीतिक नेताओंकी बात न माने जो आप जैसे कुशल शासकोंकी अवहेलना करके बेकार आपका विरोध करते हैं।

आपका,
एक प्रशंसक

१३

[मेरे मित्र जटाधारी शर्मा पशुपति नाथका दर्शन करने गतवर्ष गये थे, उन्हें किसी भांति यह पत्र मिल गया। उनके किसी कामका न होनेसे उन्होंने इसे मेरे हवाले किया। पाठकोंके अवलोकनार्थ यह प्रकाशित किया जाता है]

हनुमान ढोका

१६-१ ४६

श्रीमान् महाराजाधिराज पाँच सरकारके चरणोंमें,

आप हमारे लिये वैसे ही हैं जैसे भूखेके लिए बुद्धि बदलीके लिए धूप, अरबके लिए पानी और मुसलीम लीगके लिए अहिंसा। राणा जंग बहादुरके परिवारने आपके पूर्वजोंको शासनभारसे मुक्त करके आनन्दमय जीवन बितानेका प्रबन्ध कर दिया इसके लिए आप बधाईके पात्र हैं। आपने परंपरा तोड़ी और अपने स्वर्ण सुसज्जित नीड़के बाहर भी पांव रखा। यह तो बड़े साहसकी बात थी। आपके राणा मंत्रीने इसे स्वीकार कर लिया इसका रहस्य वायसरायके अतिरिक्त और कौन बाहरी जान सकता है।

भगवान पशुपतिनाथकी कृपासे आपके राज्यमें स्वर्णकी वर्षा होती है। और जैसे वर्षाका जल एकत्र होकर महासागरमें बह जाता है उसी प्रकारसे देशकी सारी सम्पत्ति एकत्र होकर शासक समुदायके कोशोंमें पहुँच जाती है। लोगोंकी शिकायत है कि इस देशका एक वर्ग नंगा, भूखा, पीड़ित

और शोषित है। यह तो लोगोंकी भूल है। यह धारणा ही मिथ्या है। दिनके साथ यदि रात न हो तो दिनकी पहिचान कैसे हो सकती हैं। दिन का आदर कौन करेगा। धनका आदर करनेके लिए, संपत्तिकी महत्ताके लिए दीनता आवश्यक है।

और यह साधारण समझकी बात है कि यदि नेपालके निवासी दीन-हीन न होते तो ब्रिटिश साम्राज्यकी रक्षा कौन करता। भारतीय सेनामें भरती होकर बैरीके तोपके मुखमण्डलमें प्रवेश करके अपने शरीरको उनका भोज्य बनाना किसी औरका काम नहीं है। आप स्वतन्त्र हैं इसलिये स्वाधीन जातियोंकी सहायता करते हैं। एक बार सन् १८५७ में आपने स्वतंत्र अँग्रेज जातिकी सहायता की थी परतन्त्र भारतके विरुद्ध। अँग्रेज जीत गये और भारत कुछ दिनोंके लिए जकड़ गया। आपके बल तथा पौरुषकी भूरि भूरि प्रशंसा हुई। यूरोपीय युद्धोंमें भी—आपकी तूती बोली। इससे अधिक और नेपालके लिए आवश्यक ही क्या है। नेपाली लोग भारतीय सेनामें रहें इससे उनकी बोड़ी तथा उनके परिवारके भोजन का खर्च निकल ही आता है और वह सोचते नहीं कि सारे देशका क्या हाल है। और शासक समुदाय आनन्दके आकाशमें मँडरा रहा है।

लोग कहते हैं कि नेपालमें शिक्षा नहीं है। क्या काठमांडूमें हाई-स्कूल नहीं है। इससे अधिक और किस बातकी आवश्यकता है। पढ़ लिख लेनेके पश्चात् उनके लिए नौकरी काम काजकी आवश्यकता पड़ेगी। उसके लिए कौन प्रबन्ध करेगा और शिक्षा न होनेसे हानि क्या हो गयी। क्या खुखड़ी चलाना नेपालियोंको नहीं आता, क्या सिगरेट पीना नहीं आता, शौंकी छाननेके लिए किसी स्कूलमें जाना आवश्यक है। कुछ लोगोंने पढ़ लिया बाहर जाकर वह आन्दोलन उठानेका आयोजन कर रहे हैं। इसलिए पढ़नेका प्रबन्ध

करना ही हानिकारक है। इस सम्बन्धमें राणा समुदायकी व्यवस्था देशके लिए सबसे हितकर है। वर्तमान नेपालके विधाता राणा जंग बहादुर स्वयं अपढ़ थे। उनके द्वारा राज्यकी बुनियाद स्थापित हुई। कौन कहता है कि नेपाल सभ्यतामें सबके पीछे है। जितनी लिपस्टिकें इस देशमें खपती हैं उतनी और कहीं नहीं खर्च होती। जितना पाउडर यहांकी रमणियां एक दिनमें अपने गोल कपोलों पर लगाती हैं उतना उत्तर प्रदेशमें एक महीनेमें खर्च होता होगा कि नहीं इसमें सन्देह है। क्या आपके परिवारके लिए तथा राणा परिवारके लिए सिनेमा भवन नहीं है, क्या काठमाडूमें बिजली नहीं है, क्या आपके लिए अथवा जनरल बगके लिए मोटरें नहीं हैं। अब सभ्यताके लिए और क्या चाहिये।

हमारे देशके कुछ बहके हुए लोग भारतकी छुआछूत यहां भी फैलाना चाहते हैं। भारतमें तो विदेशी राज है। यहां तो अपना राज है फिर यहां व्यर्थका झगड़ा करनेकी क्या आवश्यकता स्वतंत्र हिन्दुओंका राज्य है। आप संभवतः कह सकते हैं कि इन बातोंसे हमें क्या मतलब। हमने तो शासनकी बैलगाड़ीकी रस्सी राणा लोगोंके हाथोंमें दे रखी है। वह जो चाहें करें। हम तो शाह है शाही करते हैं। इस प्रकारकी मनोवृत्ति ठीक है।

ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये कि नवीन विचार देशमें फैलने न पाये। और ऐसा न हो कि रूस इत्यादि क्रांतकारी योजनाएँ देशमें पहुँचा दें इसलिए अमेरिका और इङ्गलैंडसे समझौता कर लेना आवश्यक है। वहांसे बन्दूकें मिल सकती हैं, मोटरकार मिल सकती हैं और नवीन सभ्यताके और सब उपक्रम मिल सकते हैं। विदेशोंके हाथोंमें स्वतंत्रता-का सूत्र चला जाय तो वह अच्छा होता है। अपने देशकी जनता-को स्वतंत्र करना अथवा उन्हें उनके अधिकार देना बहुत आवश्यक नहीं

होता, जब तक जेलका प्रबन्ध ठीक हो। आपके जेलोंकी बड़ी प्रशंसा है। सुनता हूँ स्वर्गका द्वार वहांसे निकट है। नेपाल सरकारकी कुशलताको सुनकर कौन प्रसन्न न होगा। सरकारको इसका विस्तार और करना चाहिये क्योंकि ऐसा जान पड़ता है कि कुछ लोग यहां हलचल करने पर तुले हैं। ऐसे धर्म परायण राज पर भी जहांसे यथोचित दान दक्षिणा मिलती हैं, जो इसका भक्त हैं कि शिवरात्रिके अवसरपर सबके भोजन इत्यादिकी भी व्यवस्था पैसा लिये बिना कर देता है उसके विरुद्ध आवाज उठे तो विधिकी विडंबना ही कही जा सकती है। किन्तु आप तो विवश हैं आपको इन बातोंसे क्या मतलब। अच्छी हों या बुरी। आप तो पंगु हैं। देखें, पंगु चढ़े गिरिवर गहनवाली बात आपके लिए ठीक होती है कि नहीं।

विनीति—
एक नैपाली

१४

[नीचे लिखा पत्र एक विद्यार्थीने लखनऊ विश्वविद्यालयके वाइ-सचांसलरको लिखा था। इसका मूल वहाँ गया, प्रतिलिपि लेखकने मेरे पास भेज दी है]

गणेशगंज,
लखनऊ
४–११–४६

श्रीमान्,

लखनऊ वह नगर है जो नबाबोंके अरमानोंसे सींचा गया है, बेगमोंके पाटल प्रसून समान कोमल चरणोंसे यहांकी धरती बराबरकी गयी है और ताल्लुकदारोंका ही अभिमान यहां पुष्पोंमें प्रफुल्ल हुआ है। भारतमें लखनऊकी नगरी और लखनऊ नगरीमें यहांका विश्वविद्यालय वैसे ही है जैसे मनुष्यके शरीरमें हृदय। और हृदयमें प्रेमकी स्मृति। उस विश्वविद्यालयका वाइसचांसलर होना साधारण बात नहीं है। एक सौ एक गऊदानके पश्चात् दूसरे जन्ममें मनुष्य पटवारी होता है, एक हजार एक गऊदानके बाद जमींदार होता है, एक लाख एक गाय दान देने पर ताल्लुकदार होता है। और एक करोड़ एक गायका दान देनेपर व्यक्ति लखनऊ विश्वविद्यालयका वाइसचांसलर होता है। आप तो ताल्लुकदार भी है, वाइसचांसलर भी, इसलिये उस जन्ममें आपने कितनी गायोंका गरीब ब्राह्मणोंको दान कर दिया होगा यह गणितका एक प्रश्न हो

जाता है। यों तो लखनऊ विश्वविद्यालय नाज़के आंचलकी छायामें फला फूला है किंतु आपने तो इसका प्रबन्ध ऐसा किया है जो इतिहासमें अमरत्वकी श्रेणी तक पहुँचा है। आपके ही शासनको यह गौरव प्राप्त है कि आपके यहाँके विद्यार्थी सिनेमामें रियायतके लिए हड़ताल करने लगे। इस प्रांतके और विद्यार्थी शिकायत करते हैं कि सिनेमा-भवन हमारी शिक्षा संस्थाओंके निकट न बने किंतु लखनऊके सिवाय और कहांके विद्यार्थी इस आवश्यक अधिकारके लिए जिससे उनकी शिक्षाकी वृद्धि हो सत्याग्रह कर सकते हैं। आशा है आगे सिगरेट पीनेके लिए, रनिंग फ्लश खेलनेके लिये सत्याग्रहका आयोजन होगा।

अभी मेडिकल कालेजकी कीर्तिका गान समाचार पत्रों द्वारा सुनाई दिया। विश्वविद्यालयकी कोर्टकी बैठकमें कहा गया कि महिला रोगियोंके साथ वहांके डाक्टरोंने प्रेमालाप भी करना आरंभ किया है। अस्पतालोंमें इस बातकी एक कमी थी, जीवन नीरस होता था। बीभत्सरसका ही सर्वथा व्यापार होता था। आपके इकबालसे शृंगार रसका भी उपचार होने लगा। रोगियोंको मानसिक तथा शारीरिक आनन्द मिलनेकी व्यवस्था हो गयी। शाह वाजिद अलीकी सुरम्य नगरीके अतिरिक्त यह मनोरम दृश्य कहा देखनेको मिलेगा। पेरिसकी कल्पना पूर्ण कहानियां लखनऊ मेडिकल कालेजके कारनामोंके सम्मुख वैसी ही फीकी पड़ जाती है जैसे बिजलीकी बत्तीके सामने रेंड़ीके तेलका दीप। उसी मेडिकल कालेजके विषयमें यह भी सुननेमें आया है कि क्षयके रोगियोंको वहांके अस्पतालसे निकालकर सड़कको पटरीपर रख दिया जाता है। अवश्य ही डाक्टर लोग सोचते होंगे कि कमरेसे अधिक शुद्ध हवा सड़कपर मिलती है। और क्षयके रोगीके लिये शुद्ध हवा वैसी ही आवश्यक है जैसे मंत्रियोंके लिये नयी मोटरकार। हम तो आशा करते हैं कि अगले महीनेसे मेडिकल

कालेजके किनारेकी पटरियोंपर ही क्षय रोगके मरीजोंके खाट बिछाये जायँगे ।

विगत अगस्त मासमें मेडिकल कालेजमें जो घटनाएँ हुई वह भी अभी देशवाले भूले नहीं हैं । यह सब आपकी सुन्दर नासिकाके नीचे होता चला आ रहा है । अवश्य ही सब घटनाओंका वर्णन सुनकर आपका हृदय प्रफुल्ल होकर मनीपुरी मुग्धाके समान नाचने लगता होगा । और आपकी आत्मा बैलूनकी भांति ऊपर उठ जाती होगी ।

मुझे खेद है कि आपके शासनमें लखनऊ विश्वविद्यालयमें अध्ययन करनेका मुझे अवसर नहीं मिला । मेरे अनेक डाक्टर मित्र आध घंटे तक रोते रहे कि आपके शासनकालमें उन्हें डाक्टरी पढ़नेका सौभाग्य नहीं मिला । और आपको आशीर्वाद देनेका अवसर उन्हें नहीं मिला । क्या यह नहीं संभव है कि आप इस देशके नहीं तो इस प्रांत भरके विश्व-विद्यालयोंके एक साथ वाइसचांसलर हो जांय । आप ऐसे शासक द्वारा जो आनन्द अध्यापकों तथा छात्रोंको होता है इससे और लोग क्यों वंचित रहें । मेरा एक यह सुझाव है; आशा है सरकार भी इसपर विचार करेगी । मैं आपको और क्या लिखूं । आपकी प्रशंसामें कलम कागजपर अपनेसे फिसल रही है, स्थानाभाव है, समयाभाव है । केवल इतना ही कह सकता हूँ कि विश्वविद्यालयमें आपकी मूर्ति स्थापित करनी चाहिए । आप इसे अस्वीकार नहीं करेंगे ।

आपका

न सौ कौआ, न एक लखनौआ

१५

[यह पत्र सेठ रामकृष्ण डालमियाँ के यहाँसे प्राप्त हुआ है। किसी सनकीने उनके पास भेजा था। उन्होंने उसे अपनी एक पत्नीको दिया था कि क्या इसका उत्तर किसी पत्रमें छपवाया जा सकता है। उत्तरका तो पता नहीं पत्र किसी प्रकारसे मिल गया है। भारत इतने बड़े देशमें डालमियांका महत्व हो या नहीं, पत्रका महत्व है ही]

सिरकी महाल
कानपुर
६–११–४६,

श्रीमान सेठजी !

जै गोपाल

कायदे आजम पाकिस्तानके विशेषज्ञ हैं, चरचिल जली कटी बातें सुनानेके विशेषज्ञ हैं, अंग्रेज राजनीतिज्ञ अपने भाष्यके विशेषज्ञ हैं और आप विवाहके विशेषज्ञ हैं। वात्स्यायनने, अनंगरंगके रचयिताने, जो पुस्तकोंमें लिखा उसे आपने व्यवहारमें किया। जैसे तुर्कीके सुलतानोंका और हमारे देशके अनेक राजाओंका राजमहल इतिहासमें स्थान प्राप्त कर चुका है इसी प्रकार आपने भी अपना सम्मान सुरक्षित कर लिया है।

सुना है कि आपने संसारके एकीकरणका बीड़ा उठाया है। जो ईसा और बुद्ध न कर सके उसे आप पूरा करेंगे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। यह प्रयत्न स्तुत्य है। इसके लिए आवश्यक है कि एक अमरीकी,

एक अंग्रेजी, एक फरांसीसी, एक जरमन, एक रूसी, एक जापानी, एक चीनी महिलासे आप पाणिग्रहण करें। होनुलुलू, अफ्रिका, टिंबक्टू और बोरनियोका भी ध्यान रहे। आजकलकी अन्तर्राष्ट्रीयतामें लोग छोटे छोटे देशों तथा राष्ट्रोंको भूल जाते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप ऐसी भूल कदापि नहीं करेंगे। और तब आप ही ऐसे योग्य व्यक्ति रह जायंगे जो यू० एन० ओके सभापति बन सकें।

ऐसा जान पड़ता है कि यह देश आदर्शहीन हो गया है। लोग अपना प्राचीन इतिहास भूल गये जिस देशने वसुधैव कुटुम्बकमूका संदेश संसारके कोने-कोनेमें फैलानेका प्रयत्न किया उसीने आप ऐसे महान तपस्वीकी उपेक्षा की। दूसरा देश होता तो आपकी जीवनियां प्रकाशित करता, आपके चित्रोंसे सड़क पट जाती और आपके एक एक वाक्यसे समाचार पत्रोंके शीर्षक सुशोभित होते। किन्तु यह देश है कि विभूतियोंका समुचित समादर करना नहीं जानता। किन्तु हमें पूर्ण आशा है कि आप उदास तथा उद्विग्न न होंगे। समय आ रहा है जब आपका मूल्यांकन होगा और भारतका प्रत्येक पुरुष, भारतकी हरएक नारी आपको स्मरण करेगी। जो काम कांग्रेस सौ-सौ बल खाकर पूरा न कर सकी, उसे आपने पूरा कर दिया यह कोई साधारण बात नहीं है। यदि आपके जीवनीकी और सब महत्वपूर्ण घटनाएं छोड़ दी जायं केवल एक बात ही स्मरणकी जाय तो आपको अमर करनेके लिए पर्याप्त है। आपने अपनी हवाई जहाजकी कम्पनीमें कायदे आजमका सहयोग प्राप्त कर लिया है। हजरत ईसा चमत्कार किया करते थे, सुना जाता है इस देशमें भी प्राचीन कालमें योगिगण अपने योग बलसे चमत्कार किया करते थे। इस युगमें आप चमत्कार करते हैं। लोग उन्हें बुलाते-बुलाते थक जाते हैं और वह टससे मस नहीं होते। आप उन्हें बुलाकर चाय पिलाते हैं।

खिलाते हैं और मिठाई खिलाते हैं। निःसंदेह यह असाधारण घटना है, ऐतिहासिक महत्वकी बात है। वह आपके साझीदार भी बन गये। मेरा तो ऐसा विचार था कि कांग्रेस सब प्रयत्नोंको छोड़कर आपके ही सिपुर्द सारी राजनीतिक समस्याएँ कर दे तो पांच मिनटमें सब बातें सुलझ जायं। यदि मेरी क्षीण आवाज कांग्रेसकी वरकिंग कमेटी तक पहुँचे तो मैं यह कहूँगा कि हिन्दू-मुसलिम समस्याको वह आपके सिपुर्द कर दें। जो व्यक्ति संसारको एक सूत्रमें बांध रहा हो वह हिन्दू मुसलमानोंको एक पलमें बांध देगा। जो चंडूका नशा साध सकता है उसके लिए भंग पीने में क्या कठिनाई हो सकती है।

राजनीतिके कंकरीले पथपर ही नहीं आप सरपट दौड़ सकते। अर्थके अनिश्चित संसारमें भी आपने अंगदकी भांति पांव जमाकर रख लिया है। ब्रिटिश सरकार आपकी कर्जदार है। आप उसके महाजन हैं। सुना है आप अपना सारा धन संसारके एकीकरणमें अर्पण करनेवाले हैं। आपने कितना-कितना किसके-किसके नाम लिखा है यह कौन कह सकता है। संस्थाओंको दान देना तो सरल है। उससे केवल पत्रोंमें नाम छपता है। आपने तो व्यक्तियोंको पुरस्कृत किया है। जो उच्चतम दानकी कोटिमें आता है। ऐसे कर्णों की कमी भारतवर्षमें अखर रही थी। आपने वह कमी पूरी कर दी है।

राजनीति और अर्थके साथ साहित्यका सुन्दर संयोग आपमें ही हुआ है। अपनी योग्यतासे आपने 'वीणा वरदण्ड मण्डित करा' को अपने वशमें कर लिया हैं। जो बड़े-बड़े पण्डितोंको सुलभ नहीं। जिसके लिए लोग बरसों माथा रगड़ते हैं वह आपके लिए सुलभ है। कृष्ण भगवानकी भांति आप भी यमुनाके किनारे नाचते हैं। आप राम और कृष्ण दोनों है। आपके पास कौन सिद्धि है यदि इसकी खोज करनेमें कुछ लोग लग जायं

तो बीस-पचीस व्यक्तियोंको डाक्टरकी उपाधि विश्वविद्यालयोंसे मिल सकती है। विश्वविद्यालयके संचालकोंसे मेरा विनम्र निवेदन है कि कुछ लोगोंको इसी खोजमें लगा दें। अबके लोगोंको यह भी जानकर आश्चर्य होगा कि व्यवसाय तथा सामाजिक उलझनोंमें रहते हुए भी आपकी रुचि साहित्य तथा काव्यकी ओर है। गद्य काव्यसे आपको अधिक प्रेम है। यह रुचिके परिष्कारका प्रमाण है। ऐसी बहुमुखी प्रतिभाएं कम देखनेमें आती हैं जिनका अधिकार सब ओर बराबर हो।

आपकी अवस्था साठके लगभग है फिर भी आपमें उत्साह है, रस है, जीवनी शक्ति है, कल्पना है और साहस है। हम आशा करते हैं कि शीघ्र आप अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करेंगे और अपने देशमें भी राजनीतिज्ञों तथा समाज सुधारकोंमें आपका नाम सबसे आगे रहेगा। यह पत्र इसलिए लिख रहा हूँ कि आप घबड़ायें नहीं न उदास हों। अपने पथ पर चलते ही मत रहिये दौड़ते रहिये। बढ़ते रहिये। समय आ रहा है प्रगतिशील संसार आपकी ओर आखें लगायेगा; समय आ रहा है जब नवयुवक आपको अपना नेता मानेंगे।

कुछ लोग आपकी आलोचना भी करते सुने गये है। संकुचित दृष्टिवाले अनुदार व्यक्ति कहां नहीं होते। उनकी बातोंका कहांतक ख्याल कीजियेगा। हमारे यहां तो अच्छी बातोंका लोग विरोध करना आरम्भ करते हैं। आप सन्मार्ग पर हैं आप किसीके कहनेसे विचलित न हों।

आपका,
एक प्रेमी

१६

[यह पत्र कम्युनिस्टोंके नेता श्री पी० सी० जोशीके नाम उन्हींके किसी प्रेमीने लिखा था। नाम क्यों नहीं दिया, कहा नहीं जा सकता। जनयुगमें छपनेके लिए जोशी महोदयने भेजा था। पता नहीं उसमें क्यों नहीं छपा। अभी मेरे पास हंसकी जो प्रति आयी उसीमें यह रखा हुआ मिला था।]

नागपुर

६ जनवरी १९४७

तबारीश,

एक मास हुआ मैं मासकोसे लौटा हूँ। स्तालिनने आपको प्रणाम किया है और प्रवदाकी ग्यारह कापियां और अपने लेखोंके संग्रहकी दो पोथियां आपको भेंटकी है जो अलगसे पारसल द्वारा सेवामें भेज रहा हूँ। आप मुझे नहीं जानते होंगे। मैं तो पार्टीका एक साधारण सेवक रहा हूँ। इधर पच्चीस सालोंसे मैं भारतमें नहीं था। युद्धमें निश्नी नावगोरादमें मैं मौजूद था। एक बार लेनिनने हाथ मिलाया था तब उन्होने आपका जिक्र किया था कि भावी भारतका यदि कोई नेता हो सकता है आप हो। फिर मैं समाचार पत्रोमें आपके सम्बन्धमें पढ़ता रहा। और जो कुछ लेनिनने कहा था उसपर पूर्ण विश्वास हो गया है। तबारीश स्तालिन तो आपका नित्य नाम लेते हैं। उन्होंने मुझसे यह भी कहा है कि तुम जाकर जोशी साहबसे मिलना। यहाँ आनेपर देशके सम्बन्धमें अधिक

विस्तारसे पता लगा। हड़तालें हो रही हैं, इसकी प्रसन्नता है किन्तु अभी सन्तोषजनक नहीं है। सब कारखानोंमें हड़ताल नहीं हुई। जान पड़ता है कि आप कुछ शिथिल हो गये हैं। किसानोंने हड़ताल नहीं की। आपको चाहिये कि ऐसी व्यवस्था करें कि इस साल गेहूँ बोया ही न जाय। हर जगह अपने आप दंगे हो जायंगे। किसानोंका राज स्थापित करनेके लिए इससे सरल उपाय नहीं है और वर्गयुद्ध भी छिड़ जायगा।

एक बातके लिए आप कृपा करेंगे। यदि आप हलवाहोंकी, घसियारोंकी, पुरवट वालोंकी, हड़ताल करा दें तभी ग्रामोंमें सफलता मिल सकती है। यह तो आप जानते ही हैं कि भारतवर्ष गावों का गट्ठर है। नगरोंमें कारखानोंके हड़तालसे कुछ लाभ होगा किंतु अधिक नहीं। और गांवकी हड़तालसे खाद्य नहीं उत्पन्न होगा तब लगान नहीं दी जा सकती, जमीदारों किसानोंमें लड़ाई छिड़ जायगी। सरकार और जमीदारोंसे जंग हो जायगी। सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि कांग्रेसवालोंने जो सरकार बना ली है उसकी सारी खाद्य योजना विफल हो जायगी और सरकारकी बाधिया बैठ जायगी। फिर हम जनताकी सरकार बना सकेंगे।

आप तो जानते हैं कि कांग्रेसवाले प्रच्छन्न पूँजीवाले हैं। इन लोगोंकी योजनाको विफल बनाना हम लोगोंका ध्येय है। इसमें यदि मुसलिम लीगसे समझौता कर लेना पड़े तो कोई हर्ज नहीं है। फिर हम लोग देख लेंगे। हमारे नेताओंका सदासे यही ध्येय रहा है कि अपना कार्य निकालनेके लिए किसीसे मित्रता की जा सकती है फिर उसे समाप्त कर देना तो बायें हाथका खेल है। कुछ मुसलमान नेताओंसे बात कर लेना चाहिये। मैं मौलाना हसरत मोहानीको भी एक पत्र लिख रहा हूँ। कामरेड स्तालिन ने एक करोड़ रूबल अभी इस कार्यके लिए

रखा है। किंतु रुपयेकी चिंता आप न करें। वह तो और भी आजायगा। किसी न किसी प्रकारसे हर ओर हड़ताल करा देना उचित होगा।

आपको शायद यह पता है कि भारत के गाँववाले बड़े अन्धभक्त होते हैं। इसलिये मिस्टर गांधीका प्रभाव उन पर पड़ रहा है। ऐसा न हो कि उनका प्रभाव बहुत अधिक हो जाय तब हम लोगोंको बड़ी कठिनाई पड़ेगी। हम लोगोंको रूससे थोड़ा सीखना चाहिये। वहां पहले मजदूरोंमें ही हड़ताल आरंभ की गयी। गांववालोंने आरंभमें विरोध किया। यहां वह बात न होने पाये।

खेदकी बात है कि धर्मके विरुद्ध अभी तक आपने कुछ नहीं किया। जब तक यह नहीं होता हम लोगोंकी सफलता में शंका है। आपको मैं क्या बताऊँ। धर्म ही सब अव्यवस्थाकी जड़ है। इसीसे सब विषमता है। हमने जहाँ तक पढ़ा है भारतके संबंधमें हमने समझा है कि लोगों की आस्था धर्मपर सचमुच है नहीं। एक दिखावा मात्र है। क्या हमलोग इससे लाभ नहीं उठा सकते! इस सम्बन्धमें युवकोंको जिन्होंने थोड़ी शिक्षा पायी है, जिन्हें भारतीय सभ्यताका ज्ञान नहीं है उन्हें फँसाना चाहिये। उनके दिलमें बैठा देना चाहिये कि भारतीय संस्कृति नामकी कोई वस्तु नहीं है। जिस नामसे लोग गला फाड़ कर चिल्लाया करते हैं वह ऐतिहासिक तथ्य नहीं है कोरी कल्पना है। धर्मकी आज्ञा है कि पुत्रको मित्रकी भांति मानना चाहिये, पुत्रको सिगरेट पीनेकी इच्छा है वह कहाँ तक पिताकी बात माने यदि पिता मना करता है। विज्ञानने प्रमाणित कर दिया है कि ईश्वर कोई वस्तु नहीं है। ईश्वर यदि होता तो गत युद्धमें अमरीका और इङ्गलैंडकी विजय कैसे होती। इसलिये या तो ईश्वर है नहीं या है तो पूंजीपतियोंका मित्र है। किसी भी हालतमें हमें उससे मुकाबला करना होगा। और इसके लिए भारतीय युवकोंकी सेना सबसे

उपयुक्त है। धर्मको यह फालतू वस्तु समझती है। थोड़ा आपको विशेष रूपसे ध्यान देनेकी आवश्यकता है। विद्यार्थियों को पैसेसे सहायता कीजिये। ऐसे क्लब खुलवा दीजिये जहां पार्टीकी ओरसे कभी-कभी चाय आमलेट आदिकी व्यवस्था हो।

आजकल हिन्दीमें कविता लिखनेकी प्रवृत्ति बहुत बढ़ रही है। इससे भी हम लाभ उठा सकते हैं। जो मास्कोपर, लेनिनपर, मार्क्सपर, एंजेल्सपर कविता लिखे उसे किसी न किसी प्रकारसे सहायता पहुँचानी चाहिये, उनकी प्रशंसा कर देनी चाहिये, उनकी पुस्तकें छपवा देनी चाहिये इस समय यह देखनेकी आवश्यकता नहीं है कि उनकी कवितामें कुछ है कि नहीं। कहानियां निकलवानी चाहिये।

कालेजमे पढ़नेवाली लड़कियोंमें प्रचारकी आवश्यकता है। इनका प्रभाव विद्यार्थियोंपर काफी होता है। इन्हें असन्तोष भी है। स्वतंत्रताका सुहावना सपना इनके सामने दिखाना आवश्यक है और पुरानी बातोंको इन्हींसे मिटवा देना ठीक होगा। हमारे प्रचारमें इनसे बड़ी सहायता मिल सकती है। आशा है इस ओर आप अवश्य ध्यान देंगे।

एक और वर्ग है जो पढ़ा लिखा तो कहा जाता है किन्तु जो स्वयं नहीं सोचता। विलायती विचारकोंपर ही जिसकी विचारोंकी भीत टिकी रहती है। इस वर्गमें असन्तोष भी बहुत है इसे भड़काना चाहिये। यह है दल अंग्रेजी स्कूलोंके अध्यापकोंका। यद्यपि इनमें साहस नहीं है, और भीरु प्रकारके प्राणी यह लोग हैं, फिर भी प्रोपेगैंडासे बहुत कुछ हो सकता है। हिटलरकी प्रणालीका हमें अनुसरण करना चाहिये। आशा है आप मेरी सुझाई बातोंपर ध्यान देंगे। यह मैं कह दूं कि यह सब कामरेड स्तालिनने सुझाया है। हमें तो इन्हींके कथनानुसार चलना है।

आपका,
कामरेड ठिठुरकर

१७

[यह पत्र चौधरी खलीकुज्जमाँ साहबको प्रयागसे किसीने भेजा था। मुसलिम लीगकी कौंसिलकी बैठकमें यह पत्र उपस्थित किया गया था। इस सम्बन्धमें क्या निश्चय हुआ पता नहीं, किन्तु पत्र संकलनकर्ताको एक मित्र द्वारा प्राप्त हुआ है, जो लीगके प्रमुख सदस्य हैं]

इलाहाबाद

१३—जनवरी—१९४७

जनाब चौधरी साहब,

आदाब अर्ज। मुझे इस बातकी प्रसन्नता है कि आपकी ख्याति उसी भाँति बढ़ रही है जैसे जवानीमें दाढ़ी बढ़ती है। किसी समय आप लखनऊके एक प्रमुख नागरिक मात्र थे, इस समय आप मुसलमानोंके बलशाली नेता हैं। राष्ट्रीयतामें वही छिपा हुआ गुण है जो स्वर्ण घटित सिद्ध मकरध्वजमें है। जो राष्ट्रीय-विचारोंवाला व्यक्ति सदासे हो राष्ट्रीय बना रहा वह तो नेहरू और पटेल बन ही गया, जो राष्ट्रीयताकी राह छोड़कर साम्प्रदायिकताकी पगडंडी पर आया उसने भी नाम कमाया। कायदे आजम भी पहले राष्ट्रीय थे वह नींव ऐसी थी कि इस समय वह एक ही व्यक्ति हैं; सर सिकन्दर हयात भी पहले ऐसे राष्ट्रीय थे। लन्दनमें अभिनव भारत गुप्त संघके सदस्य थे और सावरकरकी 'भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास' नामकी पुस्तक बाँटनेके लिए छिपाकर भारतमें लाये थे।

साम्प्रदायिक संसारमें उन्होंने भी नाम कमाया। आप भी राष्ट्रीय विचारों-के थे। फरहादको शीरीं नहीं मिली। उसने छातीमें एक मोटी कुल्हाड़ी दे मारी थी। कहा जाता है कि जहांगीरको नूरजहां नहीं मिली तो उसने बंगालके गवर्नरको स्वर्गका पास-पोर्ट दिला दिया। और आपको अथवा मुसलिम लीगको आजसे दस साल पहले प्रांतमें मिनिस्टरी नहीं मिली इसलिए आपने समझा कि राष्ट्रीयता बहुत अनुचित भावना है इसलिए आप राष्ट्रीयताके कट्टर विरोधी हो गये और साम्प्रदायिक नेताओंके शिर मौर हो गये।

आप चाहते हैं कि गांवोंकी पंचायतोंमें भी मुसलमानोंके प्रतिनिधिको भी मुसलमान ही चुनें, आप चाहते हैं कि इस प्रांतके पश्चिमी जिलोंमें भी पाकिस्तानी राज्य बनाया जाय, आप चाहते हैं कि यहां मुसलमानोंको अनु-पातसे अधिक नौकरियोंमें स्थान मिले। इतनी कम मांग आपकी हिन्दू लोग स्वीकार नहीं कर रहे हैं। यह उनका हठ है। यह तो कुछ नहीं है। आपने यह नहीं मांगा कि सड़कोंपर हिन्दू केवल एक ही ओर चला करें, रेलमें एक ओर पटरियां मुसलमानोंके लिए खाली रहें, सिने-मामें आधा स्थान उनके लिए रिजर्व रहे। मैं तो समझता हूँ कि आपका तर्क बहुत ठीक है। मेरा विश्वास है कि इस प्रकारकी मांगे आपकी न्याय पूर्ण हैं।

आप खलीकुज्जमां अर्थात् संसारका भला चाहनेवाले ही नहीं हैं उनके चौधरी हैं। बहुत प्राचीन कालसे हम लोगोंके यहां चौधरियों का बड़ा सम्मान होता आया है इसलिए आपका भी हम लोग बहुत आदर करते हैं। और चौधरी लोग जो कुछ निर्णय कर देते हैं वह सदा मान्य रहता है। इसलिए आपने हमारे प्रान्तके सम्बन्धमें जो कुछ कहा है वह किसे मान्य नहीं होगा। आप कहते हैं कि मुसलमानोंको चौदह

प्रति सैकड़े नौकरी ठीक नहीं हैं. सदासे जैसे चलता आ रहा है, वैसा ही होना चाहिये। कोई समय था कि लोग मालिक बननेके लिए मरते थे आज नौकर बननेके लिए लड़ रहे हैं। आप पता नहीं कितनी नौकरी चाहते हैं मैं यह जानना चाहता हूँ। यदि आप मुझे मालिक बना देते तो मैं आपको सौ में सौ जगहें नौकरी देता।

सिन्धकी बात यहां नहीं लागू हो सकती है। वहां बालूका सपाट मैदान, यहां शस्य श्यामला धरती; वहां नदीका नाम नहीं, यहां सभी जगह नदियां रेंगती रहती हैं, वहां समुद्रका खारा पानी प्रान्तका आलिंगन करता रहता है यहां गङ्गा जमुना प्रान्तको अपने भुजपाशमें कसे हुए हैं। वहां सत्ताइस प्रतिशत हिन्दू हैं इसलिए उनके साथ किसी प्रकारकी सुविधा देनी नहीं चाहिये। उन्हें किसी प्रकारके संरक्षणकी आवश्यकता नहीं है। जहां इतनी जनसंख्या है वहां क्या उनमें बल नहीं है? यदि नहीं है तो वह जीने योग्य नहीं हैं। यहां मुसलमान केवल चौदह फीसदी हैं इसलिए उन्हें सभी सुविधाओंकी आवश्यकता है। अठहत्तर प्रतिशत तक उनकी भरती पुलिसमें है तो वह कम है।

आप ऐसे नेताको पाकर लोग ही नहीं देश भी धन्य है। लोग आपकी बातें नहीं मानते यह उनका सरासर अन्याय है। यदि पंतजी आपके कहनेकी अवहेलना करें तो आप इस प्रान्तके गवर्नरसे कह सकते हैं, और हो सकता है कि गवर्नर भी आनाकानी करे तो वायसरायसे तो आप कह ही सकते है। और वह आपके हितके लिए कुछ भी उठा नहीं रखेंगे इसक। हमें विश्वास है।

आपका,
एक मित्र

महत्त्व के गुमनाम पत्र

१८

[*यह पत्र मुझे सन्मार्गके एक संपादक-महोदयकी कृपासे प्राप्त हुआ है। उन्हें धन्यवाद देते हुए अविकल प्रकाशनार्थ भेजता हूँ।*]

गोरखपुर

१३—१—४७

श्री स्वामीजी नमोनारायण

इस कलियुगमें जब धर्मकी सर्वथा छीछालेदर हो रही है, पुराणको लोग चंद्रकांता संततिका एक संस्करण मानने लगे हैं, शास्त्रोंको लोग चक्रवर्ती अरिथमेटिकसे अधिक महत्व नहीं देते और वेदोंको लोग केवल वाद-विवादमें स्मरण करते हैं, आपही एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने भागते हुए हिंदू-धर्मकी पूंछ पकड़कर उसी भांति बांध रखा है जिस प्रकार गिरती हुई चोटीको महिलाएं बांध कर कपालके पृष्ठ भागमें स्थिर कर लेती हैं। मैं नहीं जानता किन्तु मैंने सुना है कि आप वायुयानसे इसलिये भागा करते हैं कि यदि धर्म उड़ता हुआ कहीं भागने लगे तो उसे तुरत पकड़ लिया जाय।

इस कारण भारतवर्षको आपके प्रति वैसा ही गर्व है जैसा पुरुषोंको अपनी नाक पर होता है। आपने गऊ माताके प्रति विशाल प्रेम प्रदर्शित कर इस समय त्रस्त, दीना, हीना, खिन्ना, मलीना हिन्दू जातिके सूखते हृदयको उसी प्रकार सींच दिया है जैसे बरसोंके सूखे रुक्ष केश समूह पर कोई कामिनिया तेलका बोतल उड़ेल दे! आपने अपने इस

कार्य क्षेत्रके लिए मथुरा नगरी चुन ली। वही ब्रजभूमि जहाँ गोपालने बंशी बजाकर बछड़ोंको बुलाया और उनके साथ उछल कूदकी; और जहां गोपियोंके मटके उठा उठाकर पटक दिये और सड़कों पर दही उसी प्रकार बिछ गया जैसे आज कल कोलतार फैलाया जाता है। जिस धामपें भगवानने कानी उंगली पर पहाड़ उठाकर इन्द्रका गर्व चूर किया उसी प्रकार अपने दंडसे आप विदेशी शासकोंका गर्व मर्दन करेंगे। इसमें शक नहीं।

किंतु यह शंका मेरे ऐसे मूढ़के मनमें छा गयी। आप ऐसे महान् व्यक्तिको उतनी दूर जानेकी आवश्यकता क्या थी। आपने तो सब कठिनाइयोंको दूर करनेका एक उपाय ढूंढ़ निकाला है। जैसे अमृतधारा सब रोगोंकी एक मात्र अचूक औषधि है, जैसे आई० सी० एस० सब पदोंके लिए उपर्युक्त होता है और जैसे अच्छा थानेदार सब तरहकी गालियां दे सकता है उसीप्रकार आपने सब व्याधियोंको दूर करनेके लिए यज्ञ नामका उपाय खोज निकाला है। वेदों और उपनिषदोंने यज्ञकी प्रशंसामें बहुत गीत गाये हैं। किंतु उसका व्यावहारिक प्रयोग कलिकालमें आप ही ने किया। जैसे वेदोंमें हवाई जहाजके बनानेकी विधि लिखी है, बेतारके तार भेजनेकी प्रणालीका वर्णन है, एटम बम बनानेकी तरकीब लिखी है किंतु इन्हें कार्य रूपमें परिणित किया पश्चिम देश वालोंने [मुझे इसका बहुत दुख भी है] मुझे तो यहां तक कहना पड़ता है कि आपके अधिक यज्ञ करनेसे गत वर्ष पानी अधिक बरस गया। इन्द्र भगवान आवश्यकतासे अधिक प्रसन्न हो गये। और संभवतः ऐसा भी हुआ था कि यज्ञकी आहुतिमें चन्दनकी लकड़ियां भी डाली गयीं थीं। जिससे धूम्र इतना ठण्डा हो गया था कि काशीमें तो जलके ओले बन गये थे, और खपड़ोंको चकनाचूर कर गये, छानीको हविषाकी सामग्री बना दी।

महत्त्व के गुमनाम पत्र

अंग्रेज और मुसलमान गायोंकी हत्या न करें इसके लिए सत्याग्रह आप आरम्भ करनेको उद्यत हैं। यद्यपि सत्याग्रहके पहले नेता प्रह्लाद हैं फिर भी इस युगमें महात्मा गांधीने इसे अपना लिया है। संसार उन्हींको सत्याग्रहका विशेषज्ञ मानने लगा है। ऐसी अवस्थामें आप उनकी नकल करें इसकी कल्पना भगवान क्षीर सागरमें उस समय भी न करते होंगे जब रमाके कोमल कर पल्लवके स्पर्शसे भगवानके चरणोंमें गुदगुदी लगने लगती होगी और उनकी पलकें आँखोंपर ऐसे गिरती होंगी जैसे कमलके पत्तेपर ओस गिरती है। आप और महात्माजीका अनुकरण करें कुछ कुछ वैसा ही जैसे बाइसिकिलके पहियामेंसे जल प्रपात पैदा हो जाय, आमकी गुठलीमेंसे पारेकी खान निकल आये और सिंह दादरा गाने लगे।

हमारा तो ऐसा विचार था कि इसके लिए तथा पाकिस्तानकी भावनाके शमनके लिए आप एक महान यज्ञका आयोजन करें। इसीलिए यह पत्र आपकी सेवामें भेज रहा हूँ कि आप इसपर विचार करें। यह यज्ञ ऐसा होना चाहिये कि अबतक संसारमें जितने यज्ञ हुए सबका रेकार्ड तोड़ दिया जाय। आप शायद कहें कि भारतके सिवाय और कहां यज्ञ होता है। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि हिटलर भी यज्ञ करता था। चोरी चोरी। अंतमें उसे यज्ञके लिए शुद्ध घी नहीं मिला इसीसे उसकी पराजय हो गयी।

भारतवर्षमें विशुद्ध घी अभी बहुत मिलता है और इस साल जब फसल भी बहुत अच्छी हुई है इसलिए एक महान यज्ञका ठानना आवश्यक है। जनमेजयके नागयज्ञके टक्करका यह यज्ञ होना चाहिये। इतिहासमें अमरत्व प्रदान करनेके लिए यह आवश्यक है।

कुछ लोगोंका ऐसा विचार है कि यज्ञसे कोई लाभ नहीं। इससे संपत्तिका अपव्यय होता है। अवश्य ही ऐसे लोग धर्मकी नौकाके बीच छेद

कर रहे हैं। आप ऐसे लोगोंकी बातोंपर ध्यान न देनेकी महती कृपा करें। जिस कार्यका प्रत्यक्ष फल देखनेमें आ रहा हो उसकी सचाईमें किसीको इनकार हो तब क्या किया जाय। आपके अनेक यज्ञोंके परिणाम स्वरूप इस समय हिंदू धर्मकी पताका इतनी ऊँची उठ गयी है कि शीघ्र ही ध्रुव नक्षत्रको स्पर्श कर लेगी इसमें सन्देह नहीं। हिंदू धर्म सुरक्षित भी बहुत कुछ हो गया है। दो-चार और यज्ञकी देर है फिर तो हमें पूर्ण आशा है संतपाल तथा संत सोफियाके गिरजाघरमें सत्यनारायण भगवानकी कथा सुननेको मिल जायगी।

आपका,
एक उपासक

हमारे प्रकाशन

मीराँ, एक अध्ययन—*पद्मावती 'शबनम'* ३॥)

गाँधी जी का भूल—*'बेढब' बनारसी* १॥)

फुटपाथ — *राधाकृष्ण* ३)

मजला खण्ड एक— ,, .२)

मजला खण्ड दो— ,, २)

नव निबन्ध—*परशुराम चतुर्वेदी* ३)

पैरों में पंख बाँधकर—*बेनीपुरी* ४)

कहानी

आगामी आकर्षण

मीराँ वृहद्-पद संग्रह—*पद्मावती 'शबनम'*

हिन्दी कविता में प्रेम-प्रवाह— *परशुराम चतुर्वेदी*

अमर ज्योति—*बेनीपुरी*

बेढब की बहक — *'बेढब' बनारसी*

अवशेष—*सुधाकर पाण्डेय*

लोक सेवक प्रकाशन

बुलानाला, बनारस